भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 19 | उदयपुर शनिवार 15 अक्टूबर 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

त्रिवेणी कला संग्रहालय के शंख-संग्रह से खुलते अनेक दस्तावेज

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

शंख ने जो मांगा, वह दिया और न दिया तो उस शंख को 'ढपोर शंख' कहा गया। देवी ने शंख फूंका और असुरों को ललकारा। कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन ने देवदत्त, भीम ने पौंड्र, युधिष्ठिर ने अनंतविजय, नकुल ने सुघोष और सहदेव ने मणिपुष्पक जैसे शंख बजाए। शंख के नाम पर शंखद्वार तीर्थ बना। यहां के योगी ने देह त्यागकर महाराणा कुम्भा के रूप में चित्तौड़ में जन्म लिया।

उज्जैन के त्रिवेणी कला संग्रहालय में 7 से 9 सितम्बर 2022 को भोपाल की आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी द्वारा अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन उल्लेखनीय रहा। 08 सितम्बर को वहां के संग्रहालय का अवलोकन किया। इस बड़े ही अनूठे संग्रहालय में लोककला मनीषी डॉ. महेंद्र भानावतजी के साथ शंखों का खजाना देखा तो प्रभारी डॉ. भावना व्यास ने शंखों पर जानकारी मांगी और मैंने शंख उठा लिया! भोपाल की शोधार्थी श्रीमती पूजा सक्सेना ने वह क्षण क्लिक कर लिया और इतनी जानकारियां जुटाने का अवसर दे दिया।

शंख समुद्र का बड़ा सुन्दर उपहार है। उज्जैन के त्रिवेणी कला संग्रहालय में शंखों का सुंदर संग्रह किया गया है। अंगुलभर प्रमाण से लेकर कलश के बराबर शंख संग्रहित किए गए हैं। अनेक सागरों के शंख, महासागरों के शंख और विविध रूप और वर्णों वाले शंख यहां जुटाए गए हैं। कौतुक लगता है और जादू जागता है। शंखों का ऐसा खजाना हमें बड़ा ही दुर्लभ जान पड़ता है।

हमें ज्ञात होता है कि मानव जब कभी घूमतेघामते सागर तट पर पहुंचता, तो किनारे पर आए इस उपहार को पाकर प्रसन्न होता! उसने शंख बनने की प्रक्रिया देखी और 'शंखासुर' जैसे असुर की कल्पना की। समुद्र के जल को ले जाने के लिए पहला पात्र शंख ही बना! जलपान के लिए भी जाना गया। नजर या दृष्टि बाधा होने पर शंख से निराजन किया गया जो बाद में हर देवता की आरती का अंग बना। नाटक और प्रस्तुतिपरक कलाओं में यह प्रमुख वाद्य हुआ। चार प्रकार के वाद्यों में यह प्राकृतिक फूंक वाद्य है।

शंख साधना में आया तो शंखिनी जैसी सिद्धि मिली। कहानियों में यह स्मृति शेष है कि शंख ने जो मांगा, वह दिया और न दिया तो उस शंख को 'ढपोर शंख' कहा गया। धनपतियों के किस्सों में काले धन को उजला धन बताने का नुस्खा शंख को बताया गया है। बड़ा नामी रहा दक्षिणावर्त शंख! आज तक विश्वास बना हुआ है धनदायक शंख का! शंखस्मृति अपने प्रायश्चित आदि विधानों के लिए अभी तक पठनीय है। शंखलिखित स्मृति भी।

कौड़ी (वाराटिका) लेन-देन में काम आई और मुद्रा या द्यूत का हिस्सा हुई तो शंख भी सजीले रूप के कारण पूंजी जैसा सम्मान पा गया! शंख निधि का मान कितना हुआ! शंख पर्यंत गणना अभी भी पहाड़े में आती है। शंख रखना परम्परा और पहचान बना। यायावरी में मानव अपने झोले में शंख रखता था। आयुध के तौर पर भी शंख को जाना गया। विष्णु के मत्स्य, कूर्म, आदिवराह आदि स्वरूप तक शंख आयुध से संपन्न हैं। देवी ने शंख फूंका और असुरों को ललकारा।

शंख के चोरी होने पर घमासान तक हुए। शंख फूंकना युद्ध का आमंत्रण माना गया। महाभारत में कितने शंखों के नाम आए हैं! कुरुक्षेत्र के प्रसिद्ध युद्ध के आरंभ में किस-किस योद्धा ने कौन-कौन सा शंख बजाया! अर्जुन ने देवदत्त, भीम ने पौंड्र, युधिष्ठिर ने अनंतविजय, नकुल ने सुघोष और सहदेव ने मणिपुष्पक जैसे शंख बजाए। ये सब महाशंख थे : शंखान्दध्मु: पृथक्-पृथक्। श्रीकृष्ण ने पाञ्चजन्य बजाया। विचार की बात है कि इस वादन के कारण युद्ध से पहले संसार को पांच लाभ हुए : (1) स्मृतिशाली सूर्य के ज्ञान की पुन: प्रतिष्ठा (2) निष्काम कर्मोपदेश (3) एकात्म निश्चय (4) विश्वरूप दर्शन और (5) भक्ति जैसा योग। भारत जैसा है, वह रचना में मुझे बिल्कुल गीता जैसा ही लगता है।

अभिलेख सिद्ध करते हैं कि 'पंच वाद्य पूजित' जैसी सम्मानोपाधि राजाओं और महाराजाओं की रही। गीता कदाचित इसकी पहली धारणा लिए है : शंखाश्च भेर्यश्च पणवानक गोमुखा:। (1, 13) आयुर्वेद में शंखभस्म बहुत से रोगों के उपचार में उपयोगी है।

पुराणों में शंखों की महिमा और कथाएं मिलती हैं। शंखों के भेद, उनके उपयोग और प्रतिष्ठा आदि भी लिखे गए हैं। शंख की स्तुति भी मिलती है। शंख के नाम पर शंखद्वार तीर्थ बना। यह द्वारका के पास है और शंख जैसी रचना के कारण ही यह नाम हुआ होगा। यहां के योगी ने देह त्यागकर महाराणा कुम्भा के रूप में चित्तौड़ में जन्म लिया। राजप्रशस्ति, जयप्रशस्ति महाकाव्य यह विवरण लिए है। शंखाढ़ार जैसा उत्तर कर्म संस्कार शंख से जुड़ा है। विष्णु धर्मोत्तर में कहा गया है कि मंदिरों में शंख दान का फल है गांधर्वलोक की प्राप्ति।

अत्रि विक्रमार्क ने हमें बताया कि शंख के निम्न संदर्भ मिलते हैं -

गरुड़पुराण में (1.53.13) शङ्ख निधि का स्वरूप, (3.29.55) शङ्खोदक उद्धरण काल में मुकुन्द के स्मरण का निर्देश - शङ्खोदकस्योद्धरणे चैव काले मुकुन्दरूपं संस्मरेत्सर्वदैव), गर्गसंहिता (2.1.20) में मत्स्य रूप धारी श्री हरि द्वारा चक्र से शङ्खासुर का वध, (2.6.10) शङ्खासुर के पुत्र अघासुर का वृत्तान्त, (6.12) कक्षीवान् का गुरु के शाप से शङ्ख बनना, कृष्ण द्वारा उद्धार), (7.2.20) अक्रूर द्वारा प्रद्युम्न को विजय नामक शङ्ख भेंट), (7.39.44) प्रद्युम्न का मौलेन्द्र नामक शङ्ख)।

इसके साथ ही देवीभागवत पुराण (7.30.78) शङ्खोद्धार तीर्थ में धरा देवी का वास), नारदपुराण (1.66.91) शङ्खी विष्णु की शक्ति चंडा का उल्लेख), पद्मपुराण (1.6.59) विप्रचित्ति व सिंहिका के पुत्रों में एक, (2.110.18) वरुण/चन्द्रमा द्वारा नहुष को शङ्ख देने का उल्लेख, (6.90) शङ्ख असुर द्वारा वेदों का हरण, मत्स्य रूपी विष्णु द्वारा शङ्ख का वध, ब्रह्मपुराण (1.86.27) पञ्चजन दैत्य की अस्थियों से उत्पन्न पाञ्चजन्य शङ्ख की महिमा, ब्रह्माण्डपुराण (2.3.10.21) शङ्ख व लिखित : जैगीषव्य व एकपाटला-पुत्र, (3.4.12.10) भण्डासुर द्वारा रिपुघाती शंख प्राप्त करने का उल्लेख, भविष्यपुराण (1.66) सूर्य उपासना के संदर्भ में शङ्ख द्वारा द्विज मुनि को उपदेश, साम्ब आख्यान का कथन, (3.4.15.61) शत्रुघ्न के शङ्ख का अवतार होने का उल्लेख, (4.141.53) चन्द्रमा के लिए शङ्ख के दान का विधान, भागवतपुराण (4.9.4) विष्णु द्वारा कम्बु से ध्रुव के कपोल का स्पर्श करने पर ध्रुव से स्तुति का प्रस्फुटित होना, (6.8.25) विष्णु के शङ्ख से यातुधान आदि को भगाने की प्रार्थना, मार्कण्डेयपुराण (68.43/65.43) आठ निधियों में से एक शङ्ख निधि के स्वरूप का कथन है जिसको एकलिंग पुराण में भी लिया गया है।

वराह पुराण (31.15) अविद्या विजय के रूप में शंख का उल्लेख), (80.9) शङ्खकूट व ऋषभ के मध्य पुरुषस्थली का उल्लेख, (145.52) शालग्राम में शङ्खप्रभ क्षेत्र में द्वादशी को शङ्ख ध्वनि श्रवण का उल्लेख, वामनपुराण (75.39) शङ्ख निधि के आश्रित पुरुषों के गुणों का कथन : नास्तिक, शौचरहित, कृपण, भोगवर्जित, स्तेय, अनृतकथा युक्त, (90.31) शङ्खोद्धार तीर्थ में विष्णु का शङ्खी नाम है।

वायुपुराण (48.31) शङ्ख द्वीप का कथन, (69.294/2.8.288) वृत्ता से शङ्खों की उत्पत्ति, विभिन्न प्रकार/विकार, शङ्खो की ऋषा-पुत्रियों से उत्पत्ति, (72.19) जैगीषव्य व एकपाटला के पुत्र-द्वय शङ्ख व लिखित का उल्लेख), विष्णुपुराण (1.22.70) भूतादि तामस अहंकार का प्रतीक बताया गया है: भूतादिमिन्द्रियादिञ्च द्विधाहंकारमीश्वर:। बिभर्ति शङ्खरूपेण शार्ङरूपेण च स्थितम् ।।

आगे (5.21.28) में कृष्ण द्वारा पञ्चजन की अस्थियों से शङ्ख का निर्माण व यम को जीतना वर्णित है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण (1.237.7) शङ्खी विष्णु से पाणि-पाद की रक्षा की प्रार्थना, (3.52.15) वरुण के हाथ में शंख अर्थ का प्रतीक, (3.82.8) लक्ष्मी के संदर्भ में शङ्ख ऋद्धि का प्रतीक, (3.82.10) लक्ष्मी के संदर्भ में हस्ति-द्वय शङ्ख व पद्म निधियों के प्रतीक, शिवपुराण (5.26.40) 9 प्रकार के नादों में अष्टम, (5.26.51) शङ्ख शब्द से काम रूप प्राप्ति का उल्लेख है।

स्कन्दपुराण के उल्लेख बड़े रोचक है, यथा (1.1.22.5) शिव द्वारा शंखक व पद्मक नागों को नूपुर रूप में धारण करने का उल्लेख, (2.1.7.17) श्वेत-पुत्र शङ्ख नृप द्वारा शङ्ख नाग बिल पर विष्णु दर्शन हेतु तप, (2.1.34.42) शङ्ख तीर्थ का कथन, (2.1.37) श्वेत-पुत्र, वज्र-पिता, वेङ्काटचल पर अगस्त्य से साथ तप, विष्णु का दर्शन, (2.2.4) पुरुषोत्तम क्षेत्र के शङ्ख रूप का वर्णन, अन्तर्गत तीर्थ, (2.2.19.21) बल की दारु प्रतिमा के शङ्खेन्दु धवल वर्ण का उल्लेख, (2.4.13.24) समुद्र-पुत्र शङ्ख असुर द्वारा वेदों का हरण, मत्स्य अवतार द्वारा शङ् खासुर का वध, (2.5.5) मार्गशीर्ष मास में विष्णु को शङ्खोदक से स्नान कराने के महत्त्व का वर्णन, (2.7.17.8) शङ्ख ब्राह्मण द्वारा व्याध को पूर्वजन्म का कथन, विष्णु के स्वरूप का विवेचन, (3.1.25) शङ्ख तीर्थ का माहात्म्य, वत्सनाभ द्विज की कृतघ्नता दोष से निवृत्ति, (3.1.36.100) विष्णु के शंख का कार्य-यातुधान आदि का नाश, (3.3.12.39) ऋषभ योगी द्वारा राजकुमार को प्रदत्त शङ्ख की महिमा का कथन-अस्य शंखस्य निह्रादं ये शृण्वंति तवाहिता: ।। ते मूर्च्छिता: पतिष्यंति न्यस्तशस्त्रा विचेतना: ।

- शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

छत्तीसगढ़ी लोक में राम-ही-राम

राम सर्वत्र व्याप्त है। जहां-जहां मनुष्य है वहां-वहां राम की परिव्याप्ति है। मैथिलीशरण गुप्तजी ने लिखा- 'राम-नाम ललाम जिसका सर्वमंगल धाम है।' तुलसीदासजी ने लिखा- 'राम-सो बड़ो है कौन ?, राम-सो खरो है कौन ?' देश में ही नहीं, विदेश में भी राम की तूती सुनाई देती है।

लोक महान है। अलिखित शास्त्र है। कण्ठों पर आसान होकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलित-फलित होता अक्षर अमर है। वहां तो राम ही रसिया बना कृष्ण है। हरे राम, हरे कृष्ण है। राजस्थान में एक भजन का मुखड़ा है- 'थोड़ा नेड़ा बसोनी म्हारा राम रसिया / राम रसिया मीरां रे हिरदां बसिया ओ रामा....।' भारतीय लोककला मण्डल में तो हमारी सबकी प्रात:कालीन प्रार्थना ही यही था।

8 से 10 सितम्बर 2022 को उज्जैन में आयोजित 'घुमन्तू जातियों में देववाद' विषयक संगोष्ठी में डॉ. पीसीलाल यादव ने अपनी लिखी 'छत्तीसगढ़ का लोकजीवन और रामकथा' मुझे भेंट की तो अच्छा इसलिए भी लगा कि उन्होंने इसे लिखने के लिए विविध ग्रन्थों की धूल साफ नहीं की बल्कि विविध स्थानों में घूमते अनेक लोकधर्मियों से मेलमुलाकात कर उनसे जो राम-रस ग्रहण किया उसके आधार पर पुस्तक रूप में आधार स्तंभ खड़ा किया। उन सब 60 सज्जनों का बड़े विनयपूर्वक आभार मानते पुस्तक के प्रारम्भ में ही उनका श्रद्धा-स्मरण भी किया।

आज की दुनिया ऐसी नहीं लगती। आज तो 'अपना सो अपना, पराया भी अपना' बना हुआ है। हम जैसे और भी साथी हैं जो लोक के धूलधोया बन उसमें से ही आलोक निकाल रहे हैं। अस्तु....

डॉ. पीसीलाल यादव ने छत्तीसगढ़ के कण-कण में राम के ही दरसन किये हैं। उन्हें 'जित देखो तित राम' की ही दर्शना मिली। लोक-व्यवहार में, नाम-ठाम में, गीत-गाथा में, नृत्य-लीला में, भजन-कथा में, कहावत-मुहावरा में, त्यौहार-उत्सव में, फूल-पत्ती में, जंगल जड़ेली में, जन्म-मरण में; सबमें रामरमैया का ही प्रताप मिला।

यह जग-लीला हर प्राणी को नसीब नहीं होती। डॉ. पीसीलाल ने अपने हिरदै की आंखों से दृष्टिगत करते उनकी भौंहों की कलम से लिख हमारे को यह प्रसाद दिया है। उन्होंने लिखा- 'शबरी के प्रसंग में, सुवा गीत के हवाले से कि शुद्ध तो केवल प्रेम है जिसमें कोई घालमेल नहीं है। पानी को मछली ने, दूध को बछड़े ने, फूल को भंवरे ने गंदा कर रखा है पर शबरी के बेर में कोई जूठापन नहीं; 'प्रेमरस मेंहदी राचणी' की तरह प्रेम में बहता पानी निर्मला है।' (पृ. 71)

कृषि-संस्कृति से जुड़ी पहेली जिसे जनौला कहते हैं, उसमें राम हलहांकने जाते समय सीता से बिना बीज की सब्जी बनाने को कहते हैं। सीता ऊहापोह में पड़ गई। एक बुजुर्ग महिला ने बताया, फुटू पिहरी (मशरूम) में बीज नहीं होते।

सीता ने पहेली बुझाली। वह भी प्रसन्न, रामजी भी प्रसन्न। इसी प्रसंग में एक और पहेली- जिसमें एक ऐसा अद्‌भुत खाट जिस पर सोने वाले प्राणी दो हैं जिनके कान बाईस ; चकराने वाली इस पहेली का उत्तर होगा- दो कान वाली मंदोदरी तथा बीस कान वाला रावण। (पृ. 192)

एक भोजली गीत के हवाले से लेखक लिखते हैं- 'यह तो सर्वविदित है कि छत्तीसगढ़ माता कौशल्या का मायका है। यहां बनवास के 14 वर्ष में से 12 वर्ष राम-लक्ष्मण और सीता ने दंडकारण्य अर्थात् छत्तीसगढ़ में ही व्यतीत किये।' भोजली गीत में माता कौशल्या के मायके का उल्लेख मिलता है-

देवी गंगा, देवी गंगा लहर तुरंगा
हमर भोजली दाई के भींजे आठो अंगा
कोसिल्या माई के मइके में भोजली सरोबो
ओ..... ओ..... देवी गंगा। (पृ. 73)

इस पुस्तक का प्रकाशन गौरव प्रकाशन एण्ड सप्लायर्स, अश्वनी नगर, रायपुर (छत्तीसगढ़) से हुआ है। कुल 192 पृष्ठ की यह पुस्तक 450 रूपये मूल्य रखती है। लेखक के मो. नं. 94241-13122 हैं। **- म. भा.**

मड़ई : भारतीय जनपदों की लोकगंगा

डॉ. कालीचरण यादव की सुदीर्घ लोकदृष्टि से सम्पादित बिलासपुर की रावत नाच महोत्सव समिति द्वारा विगत 35 वर्षों से 'मड़ई' का वार्षिक लोकांकन भारतीय जनपदों की लोकगंगा का ही हर-हर महादेव है।

लोक को असंख्य आंखों ने शतकों बार देख-सुन-समझकर अपने-अपने रंग-ढंग से विद्वानों ने वितान दिया है, तब भी यह वितान इतना अलौकिक-लौकिक, लौकिक-अलौकिक है कि रहस्यमय अकथनीय ही बना हुआ है। इसीलिए निरन्तर कथन-दर-कथन करने पर भी इसका पूर्ण-कथन पूरा हुआ नहीं लगता।

लोकलहरी के ख्यात चिन्तक नर्मदाप्रसाद उपाध्याय संवेदना को लोक, शास्त्र और कला के उत्स का एक ही धरातल मानते लिखते हैं- ''भारतीय लोक कभी अतीत नहीं होकर प्रतिक्षण उपस्थित और सदैव सजीव है। लोक के प्राण हमारी पोथियों में नहीं बसते। वह अपना जीवन-रस उन शास्त्रों से ग्रहण करता है जो जीवन-शक्ति से परिपूर्ण और संवेदना की धारा से प्रवहमान है।'' (पृष्ठ 3)

डॉ. जीवनसिंह की दृष्टि में लोक का प्रयोग सीमित और व्यापक; दोनों अर्थों में है। उनके अनुसार हर जगह उसका अर्थ उसके सन्दर्भों से निकालना पड़ता है। वह 'अन्धों का हाथी' हो गया है जिसकी बड़ी वजह उसकी लम्बी जीवन-यात्रा और बहुआयामी प्रयोग है। इसी कारण वे रीतिकाल की दरबारी कविता को, पाठक को लोक-हृदय की सामान्य भावभूमि पर लाने की क्षमता वाली नहीं मानते। वे तुलसी के लोक को शास्त्र की बनायी लीक पर चलते अभिजन की जरूरतों और जीवन-स्रोतों से बन्धा हुआ मानते हुए कबीर के मार्फत अच्छी तरह जानने के पक्षधर हैं। - द्रष्टव्य उनका आलेख- लोककला एवं लोकदृष्टि।

डॉ. राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी उस जनपद आन्दोलन की याद दिलाते हैं जिसने आजादी के आन्दोलन में सटीक गूंज दी थी। वे उस काल के साहित्य मनीषियों में राजर्षि टण्डन, सुनीतिकुमार चटर्जी, राहुत सांस्कृत्यायन, हजारीप्रसाद द्विवेदी, देवेन्द्र सत्यार्थी, वासुदेवशरण अग्रवाल, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे अमृत पुरुषों का स्मरण कराते हैं और कहते हैं कि तब सच्चे मायने में जनपद का जुड़ाव लोकजीवन, लोकतंत्र, लोकभाषा और लोकसंस्कृति से था।

डॉ. चतुर्वेदी विश्वविद्यालय से भी अधिक जनपद की महिमा मानते यहां तक कहते हैं, 'जो अपने जनपद की भूमि, वृक्ष, वनस्पति, पक्षी, नदी, जलाशय और समग्र परिवेश के प्रति चैतन्य नहीं, उसकी राष्ट्रीयता संदिग्ध है।' - द्रष्टव्य जनपद-आन्दोलन शीर्षक आलेख।

अपने कलेवर में कोई पचास आलेखों का संजीदगीपूर्ण समझू कोटा लिये तीन सौ पृष्ठों में लोकगीतों से लेकर लोकगाथा, लोककथा, लोकनाटक, लोकचित्रण, कहावत, मुहावरे, लोकपंथ तथा लोकदेवताओं पर शोध-बोधपरक विवेचन से यह अंक सभी के लिए उपयोगी तथा भूले-बिसरे लोकज्ञान की अखूट सम्पदा को हू-ब-हू कराता है।

प्रो. शरीफ मोहम्मद का छत्तीसगढ़ का लोकनाट्य नाचा, प्रभात उप्रेती लिखित उत्तराखण्डी लोकगीत-आधुनिक परिवेश में लोक का बदलता आयाम, डॉ. आद्याप्रसाद द्विवेदी लिखित लोकगाथाओं में नाथपंथ, डॉ. विजयपाणि पांडये, रामप्रकाश, बसन्त निरगुणे के लेख कई कारणों से विशेष उल्लेखनीय लगे।

-डॉ. तुक्तक भानावत

उदयपुर दोपहर द्वारा शहर की अतिविशिष्ट विभूतियों का बहुमान

उदयपुर दोपहर दैनिक समाचारपत्र के द्वितीय वर्ष में प्रवेश होने पर 15 अक्टूबर 2022 को होटल द लीला पेलेस में विशिष्ट अवार्ड-22 समारोह आयोजित किया गया।

समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में लंबे समय से साधनापूर्वक काम कर रहे मनीषियों लोककलाविद डॉ. महेंद्र भानावत, दुर्गाराम, राहुल अग्रवाल, भावना पालीवाल (राजसमंद), भुवनेश ओझा, अंकित अग्रवाल, आर.के. शर्मा, शिवदानसिंह जोलावास, प्रो. महेश शर्मा, डॉ. आयुष गुप्ता, मांगीलाल सुथार, डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', प्रिया अग्रवाल, गजेंद्र जोशी, दामिनी सेवक, डॉ. अरविंदर सिंह, डॉ. राजेन्द्र कछावा, डॉ. निर्मल कुणावत, डॉ. अमित खंडेलवाल, मनीष सेठ, अनिल नाहर, राजकुमार सुराणा, कैलाश सोमानी, महावीर चपलोत, धीरज जोशी, डॉ. लाखन पोसवाल आदि को उदयपुर दोपहर के प्रकाशक एवं संपादक डॉ. आनंद गुप्ता, मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा, चिकित्सा विभाग के संयुक्त निदेशक जुल्फीकार काजी, कैंसर विशेषज्ञ डॉ. मनोज महाजन तथा उदयपुर दोपहर के वरिष्ठ संपादक राजेश कसेरा ने विशिष्ट अवार्ड-22 से विभूषित किया। इस अवसर पर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया।

समारोह में डॉ आनंद गुप्ता ने शहर की चिंताओं और अपेक्षाओं को रेखांकित किया। उन्होंने साहित्य, पत्रकारिता, पर्यावरण, होटल आदि से जुड़े लोगों से शहर की चिंताओं के निवारण हेतु प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अखबार जन अपेक्षाओं का स्वर होता है और बदलाव का प्रभावी पक्ष, उदयपुर दोपहर इस दिशा में काम कर रहा है।

ताराचंद मीणा ने कहा कि जिस भावना से इस आयोजन में प्रतिभाओं को नवाजा गया वह भावना बनी रहे। उदयपुर की परंपराएं सदैव सकारात्मक और प्रशंसनीय रही हैं। पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचे, इसका प्रयास कोटड़ा के आदि महोत्सव के रूप में सोचा जा सकता है। उप महापौर पारस सिंघवी ने उदयपुर दोपहर के इस आयोजन को यादगार बताया। आयोजन में हरीश राजानी, मनोज बिसारथी, शिखा सक्सेना, डॉ. तुक्तक भानावत, डॉ. पंकज गौड़, विक्रमसिंह चौहान, अल्पेश लोढ़ा, गिरीश शर्मा, कपिल श्रीमाली, पृथ्वीराज सिंह चौहान, मनु राव, हितेश जोशी, विनोद, लोहार, कुंभलगढ़ राहुल सोनी सहित व्यवसाय, होटल, चिकित्सा, मीडिया आदि से जुड़े लोग मौजूद थे। धन्यवाद देते उदयपुर दोपहर के वरिष्ठ संपादक राजेश कसेरा ने शहर को सुंदरतम बनाने के लिए सबसे सहयोग की अपील की। संचालन पत्रकार शकुंतला सरुपरिया ने किया।

- डॉ. तुक्तक भानावत

स्मृतियों के शिखर (151) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अनुभव से लगा कि शब्द-शक्ति सर्वोच्च शक्ति है

बचपन से लेकर आजतक के सैकड़ों अनुभव इस बात के साक्षी हैं कि शब्दों की शक्ति में ही सर्वोच्च शक्ति निहित है। शक्ति के कई रूप हैं मगर शब्द-शक्ति की महिमा अपरम्पार अपरिमित है और इसी को सर्वोच्च शक्ति भी कही गई है। व्यावहारिक धरातल भी हम देखते हैं, शब्दों की मार ही ज्यादा असरदायक होती है। यह मार पीढ़ियों तक रहती है तब भी जब कहने वाला और झेलने वाला दोनों नहीं रहते हैं। शस्त्रों के घाव तो देर-सवेर मिट जाते हैं पर शब्दों के घाव अखण्ड बने रहते हैं।

शब्दों की मार अच्छा और बुरा, दोनों तरह के असर करती है। अच्छे शब्द सहज ही किसी को मोहित कर लेते हैं। इसीलिए कहा गया है, मृदुभाषी बनो। मीठी वाणी बोलो। कवि रहीम कहते हैं।

मीठी बोली बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।

पक्षियों में कोयल और कौए की तुलना कर कहा गया है कि कोयल का 'पिहु-पिहु' कोमल स्वर बड़ा ही मीठा, मृदुल सबको अति प्रिय लगता है जबकि कौए का काँव-काँव बड़ा ही कर्कश और कर्ण-कटु लगता है।

शब्दों को साधने वाले साधक होते हैं। साधने की एक पूरी प्रक्रिया है। ये साधक दो तरह की साधना करते हैं। अच्छी साधना करने वाले साधक विपदा, विपत्ति, कष्ट, रोग तथा विसंगतियों से बचाते हैं।

इनकी साधना और क्रियाएं सकारात्मक सोच और शुभ मंगलकारी फल-परिणाम वाली होती है। ऐसे साधक स्वयं भी फलते-फूलते तथा अन्यों को भी सुख-समृद्धि देते हैं जबकि बुरी क्रिया करने वाले साधक नकारात्मक फल देकर स्वयं का और अन्यों का भी नुकसान करते हैं। नकारात्मक अथवा निकृष्ट क्रिया करने वालों का अव्वल तो कोई परिवार नहीं होता और होता भी है तो अन्ततोगत्वा नष्टप्राय ही होता है।

वेद हमारे यहां सबसे प्राचीन ग्रंथ कहे गये हैं। उनमें जो शब्द अथवा उन शब्दों से बने वाक्य हैं वे अनेकानेक लोगों द्वारा उच्चरित होने के कारण मंत्र ही बन गये हैं। इनका इष्ट की सिद्धि या देवता की प्रसन्नता के लिए जप किया जाता है। ऋषि-मुनियों द्वारा जिस ढंग से एक-एक शब्द का उच्चारण किया जाता, उसी पद्धति से आज भी जप-अनुष्ठान आदि में पंडितों द्वारा उच्चारण किया जाता है जो श्रोताओं पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है।

मंत्रों का प्रभाव सब कोई स्वीकारते हैं। अनेक साधक अनेक प्रकार से मंत्रों का प्रभाव दर्शाते हैं। झाड़-फूंक करने वाले इन मंत्रों द्वारा व्यक्ति पर हावी दुरात्मा के प्रभाव से छुटकारा दिलाते हैं। भूत-प्रेत जैसे नुगरों से रोगी को मुक्त करते हैं। आदिवासियों में सर्वाधिक रूप में झाड़-फूंक, तंत्र-मंत्र, जादू-टोने प्रचलित हैं। स्वाभाविक है, इनके जानकार सिद्ध साधक भी उतने ही हैं पर ये विद्याएं गुपचुप गुप्त रूप में होने के कारण बहुत चौड़धाड़े नहीं हैं। जानकारों का अतापता भी हरएक को नहीं रहता है।

आदिवासियों का सारा इलाज झाड़-फूंक, तंत्र-मंत्र तथा टोने-टोटकों से जुड़ा हुआ है। झाड़ा डालने का काम झाड़ू से किया जाता है। ऐसा करने वाला झाड़ागर कहलाता है। देव-देवरे में मोर-पंखों का झाड़ू होता है। देव-प्रतिनिधि भोपा उसी से इलाज करता है। झाड़े से सांप काटे का इलाज भी किया जाता है। इसका एलम बड़ा जबरा होता है।

सांप की बांबी से दूर बैठ एक सौ आठ मणियों की माला फेरी जाती है। पास में मिट्टी के नौ नाग रखते हैं। दूध का कटोरा रखा जाता है। सांप बांबी से निकल दूध चरपराता पुन: बांबी में घुस जाता है तब नारियल की धूप देने पर सांप आता है। सांप को शरीर में बुलाने का मंत्र भी होता है। ऐसी स्थिति में जहरचढ़े को वृक्ष से कट्ठा बांध कर नीम के झाड़ू से मंत्रा जाता है। सर्प के शरीर में प्रवेश करने पर सवाल-जवाब होते हैं। अंत में सर्प जहर चूस कर व्यक्ति को चंगा करता है।

इसके लिए नागपंचमी को साधना करनी पड़ती है। यह साधना कमर तक पानी में बैठ करनी होती है। आजीवन तुरई, भींडी तथा आल नहीं खाने का सौगंध रखना पड़ता है। चौमासे में अरवाणे पांव अर्थात् जूते आदि नहीं पहने जाते हैं। आदिवासी समाज में गुरु गोरखनाथ की मानता बड़ी प्रबल है। सांप का जहर उतारने का मंत्र इस प्रकार है-

'कारो हांप, गोरो हांप, रातो हांप उतरे तो उतारूं। नी उतरे तो मारूं। करूं गरु गोरखनाथ नी दुवाई। मंत्र चलावूं। धरतीमाता रो जाप करूं। सांद हूरज ने धोक लगावूं।'

अर्थात् काला सर्प, गोरा सर्प, लाल सर्प का जहर उतरे तो उतारूं। गुरु गोरखनाथ की दुहाई करूं। मंत्र चलाऊं। धरतीमाता का जाप करूं। चांद-सूरज को नमन करूं।

आदिवासियों में ऐसी अनेक विद्याएं विभिन्न रूपों में प्रचलित हैं। इनमें काला जादू, मूठ द्वारा मारक प्रभाव, वशीकरण, सम्मोहन, विद्वेषण आदि हैं। फंद-फांदों में पुरुषों में भूत-प्रेत तथा महिलाओं में डायन-चुड़ैल का प्रवेश बड़ा कष्टदायी होता है। इनका ठीक से इलाज नहीं होने पर व्यक्ति को मृत्युगामी तक होते देखा गया है। पीर तथा सिकोतरा-सिकोतरी लगने पर भी उनसे छुटकारा पाना सहज नहीं है।

मूठ को सर्वाधिक प्रभावी तथा तत्काल फल देने वाली मारक विद्या कहा गया है। यह कई तरह की होती है और इसकी साधना के भी अलग-अलग प्रकार हैं। कामण में पुतला छोड़ा जाता है। वह ज्यों-ज्यों गलता है त्यों-त्यों कामण किया व्यक्ति क्षीण-जीवी होता रहता है। कलवा भी एक हवा होती है जो तांत्रिक को ही नजर आती है। मरे हुए बच्चे पर इसकी साधना की जाती है।

माल्या वह प्रेत होता है जो बच्चे को मृत्यु होने पर अपनी योनि में जकड़ लेता है। सिंयारा-सिंयारी विद्या सीखने पर वह किसी के घर की गुप्त-से-गुप्त बात जान लेता है। तांत्रिक पुरुष ही नहीं महिलाएं भी होती हैं। ऐसी ही स्यारी और मैली होती है। यह महिलाओं में होती है।

मंत्र से जुड़ा तंत्र झाड़-फूंक के लिए प्रयुक्त होता है। इसी से मिलता-जुलता यंत्र होता है। यह एक विशिष्ट प्रकार की रेखाओं से युक्त कोष्ठकी रूप लिए डिब्बे अथवा खानेदार होता है। यह आलौकिक शक्ति का धारक होता है जो मुख्यत: अनिष्ट की रक्षा हेतु तांत्रिकों द्वारा तैयार किया जाता है। इसे शरीर पर धारण किया जाता है। यह और भी कई रूपों में काम आता है।

दीवाली पर लक्ष्मीजी की पूजा के लिए विविध यंत्रों का प्रचलन देखने को मिलता है। ये दीवाल पर भी बनाये जाते हैं और सुनार द्वारा चांदी, तांबा आदि के पतरड़ों पर भी खुदाये जाते हैं। किसी कागज पर बनाकर उसे बीड़कर लाल-सफेद कपड़े में मुख्यत: समस्याग्रस्त व्यक्ति की भुजा पर या फिर मादलिये में बंद कर भी बांधा जाता है। विविध देवी-देवता के नाम से भी कुछ यंत्र मिलते हैं। चामुण्डा, चण्डी आदि के मंत्रों का प्रचलन बड़ा प्रभाव लिये है। विविध प्रकार के ये मंत्र संख्या-वाचक, श्लोक-वाचक तथा शब्द-अक्षर-वाचक भी होते हैं।

शब्द-शक्ति का अनुमान हर कोई नहीं लगा सकता। इसको नापने का यंत्र भी वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित किया गया है। डॉ. वोएड ने एक ऐसा यंत्र बनाया जिसके सम्मुख बोलने से मुंह की कंपन का पता लगता है। जोर से बोलने पर उस पर इतना दबाव पड़ता है कि वह यंत्र उसे सहन नहीं कर बिखर पड़ता है।

जिन शब्दों का हम उच्चारण करते हैं उसका प्रभाव हमारे शरीर के विभिन्न अंगों पर भी पड़ता है। कान और त्वचा पर उसका प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। इसमें भी कान की त्वचा पर सर्वाधिक असर पड़ता है कारण कि यह त्वचा अधिक संवेदनशील होती है।

कान एक प्रकार का माइक्रोफोन ही होता है। कर्ण-स्नायु के अतिरिक्त शब्दों का सर्वाधिक प्रभाव मस्तिष्क, हृदय, पेट, यकृत तथा रक्त, प्रस्वेद एवं अंत:स्त्रावी ग्रंथियों पर पड़ता है। ऐसा लगता है जैसे हमारा शरीर एक बिजलीघर है जिसके अंग-अंग से विद्युत प्रवाह होता प्रतीत होता है।

शब्दों का प्रभाव कई रूपों में पड़ता है। यह तो सभी ने सुना कि तानसेन जब राग छेड़ता था तो उसके प्रभाव से दीपक जल उठता। बैजू बावरा संगीत छेड़ता तो हिरणों का झुण्ड आ खड़ा होता। ओंकारनाथ ठाकुर जैसे अनेक संगीतज्ञों के ऐसे ही अजूबे अनुभव रहे हैं। डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने जब वे मृत्यु शैय्या पर थे तब उदयपुर के लोकगायक चन्द्र गंधर्व को गाना सुनाने बुलाया था पर डाक्टरों ने उनकी स्थिति देखते चन्द्र गंधर्व को उनसे नहीं मिलने दिया। वे पूर्व में चन्द्र गंधर्व को सुन चुके थे इसलिए उनकी गान-विधा से प्रभावित थे।

शब्दों द्वारा उत्पन्न विद्युत शक्ति के बारे में चौंकाने वाले तथ्यों का हवाला देते अरूणकुमार शर्मा का यह कथन उल्लेखनीय है। वे लिखते हैं- 'कल्पना कीजिए, संसार में कुल तीन अरब प्राणी हैं जिनमें आधे लोग दिन के प्रकाश में कार्य व्यस्त हैं तो आधे रात्रि में सो रहे हैं। जागरण काल में जो तीन घण्टे बातचीत करते हैं वे कम-से-कम 6 हजार खरब वाट विद्युत शक्ति अपने शब्दों और ध्वनियों से उत्पन्न करते हैं।

यह विद्युत ऊर्जा दामोदर घाटी, रिहंद बांध, भाखड़ा नांगल एवं मुम्बई के ट्रांबे परमाणु-प्रतिवर्तक की सम्मिलित शक्ति से कहीं अधिक है तथा भारत में उत्पन्न होने वाली कुल बिजली से लगभग आठ गुनी अधिक है। इससे सम्पूर्ण विश्व में घण्टों प्रकाश किया जा सकता है। यदि इस ऊर्जा की एक यूनिट की कीमत केवल पचास पैसे रखी जाय तो इसकी कीमत एक खरब रूपये होगी।' (- कादम्बिनी, दिसंबर 1978)

प्राचीनकाल में हमारे यहां आर्यों ने यज्ञानुष्ठान प्रारम्भ किया। यह एक पवित्र धार्मिक कृत्य था जो शुभ-मंगल का प्रतीक था। किसी शुभ धार्मिक अथवा लोकोपचार के कार्य पर जो हवन किया जाता उसमें पंडितप्रवर देवता अथवा किसी दिव्य शक्ति का आव्हान करते। यह आव्हान किसी मंत्र अथवा प्रबल शब्द-शक्ति लिये होता जिसका स्थायी प्रभाव माना जाता। ऐसे यज्ञादि होम-हवन, गृहशान्ति तथा नकारा शक्तियों से बचाव के लिए आज भी प्रचलन में हैं।

कई जातियों में मृत्यु के बाद मृत्युगामी की पूरवज के रूप में मान्यता का विधान है। विशेष अनुष्ठान के साथ पूरवज को घर में स्थापित किया जाता है। पूरवज बना व्यक्ति परिवार के किसी सदस्य को अपनी छाया देकर विशिष्ट अवसर पर बुलाने-आव्हान करने पर उसके शरीर में अपनी उपस्थिति देता सभी से रू-ब-रू होता है। उनके सवालों-समस्याओं का समाधान करता है। बालजन्म, विवाह जैसे प्रसंगों पर उन्हें रातिजगा दिया जाता है। उनकी मृत्युतिथि पर उनकी विशिष्ट सेवा-पूजा, लपसी-चावल-नारियल की चटक की धूप दी जाती है। पूरवज महिला अथवा पुरुष किसी को भी, जिसके ऊपर वे मेहर हो जाते हैं, आ सकते हैं। पूरवज छोटा बच्चा यहां तक कि गर्भस्थ शिशु भी बनता देखा गया है। ये जिसके शरीर में आते हैं वह उस पूरवज का 'घोड़ला' नाम से सम्बोधित किया जाता है।

जनजाति के लोगों में अपने पूरवज के प्रति दृढ़ आस्था पाई जाती है। कार्तिकी पूर्णिमा और वैसाखी पूर्णिमा पर उनका जागरण किया जाता है। रातभर विशेष आयोजन द्वारा उन्हें पूजा-प्रतिष्ठा दी जाती है। विविध गीतों द्वारा उनका आव्हान किया जाता है। खेत, जलाशय अथवा नदी तट पर कोई पत्थर रोपकर उनका स्मारक बनाया जाता है।

किसी धातु की छोटी प्रतिमा बनाकर घर में बांस निर्मित कंडिये में उन्हें सुरक्षित रखा जाता है। लच्छा अथवा मोली के सहारे उन्हें गले में लटकाया जाता है। ये पितरात्माएं अदृश्य रूप में व्यक्ति के आसपास बनी रहती हैं। आव्हान करने पर व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर बात करती हैं। किसी भी समस्या का समाधान करती हैं और मनचाही मुराद पूरी करती हैं।

पुरुष पूर्वज की प्रस्तर प्रतिमा 'चीरा' कहलाती है जबकि स्त्री पूर्वज 'मातलोक' नाम से जानी जाती है। जीवितावस्था में जो व्यक्ति जिस प्रकृति, स्वभाव, शौक, हुनर तथा मौज में रहा उसी के अनुसार उसकी प्रतिमा ऊंटसवार, घुड़सवार, बंदूकधारी, ढाल-तलवार लिए, गाड़ीवान, शेरसवार, हष्टपुष्ट काया में रौबदार आकृति वाला अंकित करा दिया जाता है।

उदयपुर के पास के उंदरी गांव की सन् 2004 की कार्तिक पूर्णिमा वाली रात का मैं प्रत्यक्षदर्शी बना। यह रात आदिवासी स्त्री-पुरुषों की पूर्वजों के नाम रही। आसपास के निवासी ढाक-थाली जैसे वाद्यों की गूंज के साथ नाचते-गाते-उमड़ते मेले के रूप में एकत्र हुए। कोई 20 चीरा-स्थलों पर भोपों को पूर्वजों के भाव हुए। रातभर नंगा तथा चैना नामक भोपे के शरीर में एक-के-बाद-एक कर पचास के करीब पूरवजों का भाव हुआ। प्रत्येक पूरवज ने मनुष्य लोक में रहते अपनी प्रकृति, पहचान, रुचि तथा कर्म के अनुरूप उसी बोली के रंग-ढंग में अभिव्यक्ति दी।

मैं देखकर दंग रह गया जब किसी ने धनुष साधकर अपनी उपस्थिति दी तो किसी ने साफा बांध दर्पण में अपना चेहरा देखा। एक ने रोटला तो एक ने छाछ मिश्रित राब मांग अपनी भूख मिटाई। एक पूरवज ने तो पीने को दारू अर्थात् शराब की बोतल की फरमाइश की तो जवाब दिया गया कि दारू पीना सरकार की ओर से बंदिश में है सो माफी दो। इसकी सजा में जेल की हवा लिखा है। यह सुन वह देवता कुछ नहीं बोला।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 अक्टूबर 2022

सम्पादकीय

नाम से अधिक उपनामों की बाजीगरी

साहित्य-समाज में नाम के साथ उपनाम रखने की परम्परा भी कम महत्त्पूर्ण नहीं रही। ऐसा भी हुआ जब मूल नाम के स्थान पर उपनाम ने अधिक पहचान दी। कुछ ऐसे भी हुए जिनके उपनाम नहीं चल पाये। कुछ ने तो मूल नाम ही नजरबंद रखे। सर्विस में वह नाम अदृश्य चलता रहा जिससे साहित्य-जगत भी अनजान रहा। ऐसे भी मिलेंगे जिनके अलग-अलग नाम परिवर्तित होते रहे पर राशि एक ही रही।

ऐसे नाम भी हैं जिन्होंने अपने नाम के साथ लगने वाला सहायक संबोधन यथा- लाल, मल, सिंह, सहाय, कुमार नहीं रखा। कुछ ने गोत्र भी हटा दी और मात्र जाति विशेषण लगाया जैसे जैन, राजपूत, कुम्हार, माली, वैरागी ब्राह्मण। जाति छिपाने वालों में अधिकतर ने शर्मा, वर्मा, विश्वकर्मा लिखना शुरू कर दिया।

यह भी पाया गया जब पिता की गोत्र अलग और पुत्रों में भी भिन्न-भिन्न गोत्रें मिलीं। व्यवसायजनित पहचान वाले भी मिले जैसे - मिस्त्री, सिकलीगर, लोहार, सुथार, तंबोली। अंग्रेजी के शब्दधारी संक्षिप्त नाम तो कई मिल जायेंगे।

शोर्टकट की संस्कृति में पूरे नाम भी शोर्ट यानी संक्षिप्त होने लगे। कुछ लोगों ने अलग-अलग विधा में मूल नाम तो वही रखा पर उसके ऐरेदोरे, आगे-पीछे कुछ और जोड़ दिया। ऐसे लोग भी मिले जो पीएच.डी. नहीं होने पर भी नाम के साथ डॉ. लिखने लगे। वे भी हैं जिन्हें अमान्य संस्था द्वारा ऐसी उपाधि देने पर भी वे डॉ. लिखने लग गये।

जानकारी का यह भी एक दिलचस्प विषय है। इंटरव्यू में ऐसा भी पूछा गया जब किसी साहित्यकार का उपनाम बताकर मूल नाम पूछा तो साक्षात्कारी सकपकाता रहा और परिणाम भी आशाजनक नहीं रहा। आइये, कुछ नामों की छानबीन करें।

गोत्र के पहले और बाद में नाम रखने वाले भी मिल जायेंगे जैसे गोस्वामी तुलसीदास। अपने नाम को उलट-पुलट कर रखने वाले भी जिन खोजा तिन पाइया हो जायेंगे जैसे- राजेश कुमार से कुमार राजेश, विश्वास कुमार से कुमार विश्वास । गुजरात में अपने नाम के साथ पिता का नाम चलाने की परंपरा है। इसकी देखादेखी के भी कुछ नाम मिल जायेंगे।

घर के नाम अलग और नामकरण संस्कार से आया नाम अलग रखने वाले भी कई हैं। आंचलिक परिवेश में नामों को बिगाड़कर पुकारने वाले मिल जायेंगे। कुछ तो चिढ़ाने या गाली देने या अपेक्षाकृत उम्र में छोटा होने के कारण भी बिगड़े नाम से पुकारने लगे। जैसे - मांगीलाल से मांग्या, मिठूलाल से मिठ्या, नाथूलाल से नाथ्या।

बालकों में चिढ़ाने वाले नाम भी बड़े अजीबोगरीब मिलेंगे। कभी-कभी उन्हें लयात्मक तरीके से बोलकर चिढ़ाया जाता है। यथा- मिठूलाल, चने की दाल, उड़ गई टोपी, रह गये बाल। मांगीलाल के लिए- मांग्यो तांग्यो, ततड़ंग तांग्यो। ऊंकारलाल के लिए- ऊंकार्‌यो पुंकार्‌यो। बालिकाओं में भी ऐसी परंपरा बखूबी मिलती है। पहले तो हर नाम अर्थवाची थे पर अब उटपटांग, अटरम सटरम मनमाफिक नामों की बहार आ गई है।

पहले उपनाम की महत्ता वाले नाम ही लें तो प्रियप्रवास महाकाव्य के प्रणेता अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', उर्वशी के लेखक रामधारीसिंह 'दिनकर', कामायनी के जयशंकर 'प्रसाद', मधुशाला के हरिवंशराय 'बच्चन', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', शिवमंगलसिंह 'सुमन', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि को लिया जा सकता है।

राजस्थान में ऐसे अनेक नाम मिलेंगे जो उपनाम सहित जाने जाते हैं। जैसे - प्रकाश 'आतुर', यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', उपेन्द्र 'अणु', डाड़मचंद 'डाड़म', ब्रजमोहन 'तूफान', योगेश 'अटल', बी.एल. माली 'अशांत', राजकुमार जैन 'राजन', रामचरण 'महेन्द्र', नेमिचंद जैन 'भावुक', दयाकृष्ण 'विजय', परमेश्वर 'द्विरेफ', शिव 'मृदुल', मेघराल 'मुकुल', कन्हैयालाल शर्मा 'अनंत', रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', शंकर 'क्रन्दन', इकराम 'राजस्थानी', रमेश 'मयंक', इकबाल 'सागर' आदि।

अजीब तो यह है कि कुछ साहित्यकारों के उप नाम ही उसके बाद के परिजन अपने नाम के साथ लगाने लग गये और वही उनकी बिरादरी या गोत्र बन गई। बच्चन के बाद उनकी पत्नी तेजी बच्चन और पुत्र अमिताभ बच्चन और पत्नी जया बच्चन नाम से जाने जाते हैं। इसी प्रकार रांगेय राघव की पत्नी अपने नाम के साथ सुलोचना राघव लिखती हैं।

यथा नाम चलाने वालों में जैनेन्द्र कुमार, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, प्रेमचंद, सुमित्रानंदन पंत, महावीरप्रसाद द्विवेदी, कमलकिशोर गोयनका, बालमुकुंद गुप्त आदि अनेक ख्यात नाम हैं। मूल नामों को नजरअंदाज कर साहित्य में अन्य नामों की प्रसिद्धिलियों में खटका 'राजस्थानी', कमर 'मेवाड़ी', श्रीकृष्ण 'जुगनू' के नाम लिये जा सकते हैं।

कानोड़ मित्र मंडल द्वारा भानावत की तीन पीढ़ियां सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर में निवासरत कानोड़वासियों के चालीस वर्ष पुराने मैत्री संगठन कानोड़ मित्र मंडल के अध्यक्ष हिमांशुराय नागोरी एवं महामंत्री दिलीपकुमार भानावत द्वारा 09 अक्टूबर को ग्रीन रायल रिसोर्ट, अम्बेरी, उदयपुर में आयोजित मैत्री समारोह में कानोड़ मित्र मंडल के संस्थापक एवं वर्ष 1982-83 से लेकर 1990-91 तक अध्यक्ष रहे डॉ. महेन्द्र भानावत को श्रेष्ठ समाजसेवा सम्मान प्रदान किया।

डॉ. भानावत के आत्मज डॉ. तुक्तक भानावत को वर्ष 2008-11 में महामंत्री के पद से कुशल नेतृत्व एवं सेवा कार्य हेतु श्रेष्ठ समाजसेवा से अलंकृत किया गया। इसी प्रकार डॉ. तुक्तक के पुत्र शब्दांक

भानावत को दिये गये प्रतिभा सम्मान को शब्दांक की माताश्री रंजना भानावत ने ग्रहण किया। उल्लेखनीय है कि शब्दांक ने पिछले वर्ष ही बोम्बे आईआईटी से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की थी। अभी वह गुड़गांव के मास्टर कार्ड में कंसल्टेंट है।

वनिशा मिस फ्रेशर तथा प्रियांश मिस्टर फ्रेशर बने

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज द्वारा फ्रेशर डे मनाया। कार्यक्रम अध्यक्ष कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, मुख्य अतिथि जीयू अध्यक्ष डॉ. एफ.एस. मेहता, जीएमसीएच डीन डॉ. डी. सी. कुमावत, अतिरिक्त प्राचार्य डॉ. मनजिंदर कौर, सीईओ प्रीतम तंबोली, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सुनीता दशोतर, न्यायाधीश डॉ. पूजा गांधी, डॉ. मनोचिकित्सा विभाग के एचओडी जीतेंद्र जीनगर एवं एनेस्थिसियोलॉजिस्ट डॉ. चारु शर्मा ने वनिशा जालंधरा को मिस फ्रेशर 2021 और प्रियांश पालीवाल को मिस्टर फ्रेशर 2021 का ताज पहनाया। इस दौरान रैंप वॉक में 94 छात्रों ने भाग लिया। इसे स्टैंड-अप कॉमेडी एक्ट द्वारा रुक-रुक कर विराम दिया गया। छात्रों ने नृत्य पर मनमोहक प्रस्तुतियां देकर आगन्तुकों को थिरकने पर मजबूर कर दिया।

इन दिनों डॉ. ब्रजमोहन जावलिया

17 सितम्बर को डॉ. ब्रजमोहन जावलिया (94) के निवास भटियानी चोहट्टा स्थित 101, हमीरगढ़ की हवेली में भेंट की। पहले जब भी मिलना हुआ, उनकी श्रवण-शक्ति मंद होने से विचारों का आदान-प्रदान पाटी पर बरतने की लिखावट से होता रहा। यों तो वे स्वस्थ हैं पर स्मरण-शक्ति थोड़ी कम हो गई। उनके सुपुत्र देवेन्द्रजी से काफी देर तक बात होती रही। वे नगर निगम में पार्षद रह चुके हैं।

डॉ. जावलियाजी से मेरा परिचय सन् 1960 से है। प्राचीन राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति के कुछेक चावे-ठावे विद्वान मनीषियों में डॉ. जावलियाजी ने पिछले 75 वर्षों से अपना सम्पूर्ण जीवन लेखन-चिन्तन में समर्पित किये रखा है। प्राचीन लिपि के विद्वान के रूप में उन्होंने अगणित शिलालेख, ताम्रपत्र, पट्टे-परवाने और हस्तलिखित ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों से अनूठी और अज्ञात सामग्री ढूंढ़ साहित्य और भाषा संस्कृति के भण्डार में अमूल्य अभिवृद्धि की।

डॉ. जावलियाजी ने खुमाणरासौ, राणा रासौ, हमीरायण जैसे ऐतिहासिक काव्यग्रंथों का सम्पादन किया। अमरूक शतक, गंगा लहरी जैसी संस्कृत कृतियों का राजस्थानी काव्यानुवाद किया। मुंहता नैणसी कुशललाय जैसे भारतीय साहित्य निर्माताओं पर मोनोग्राफ लिखे। राजस्थानी लोकजीवन कोश और ग्रामीण उद्योग-धंधों से जुड़ी शब्दावली का विपुल प्रामाणिक अध्ययन-संकलन जैसा कठिनेतर कार्य किया। अनेक विश्व कोशों में राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति और जनजीवनपरक तथा छन्द-अलंकार विषयक जानकारी उन्हीं के बूते की बात थी। उन्होंने देश-विदेश के अनेक विद्वानों, शोधाकर्मियों तथा रसिकों को समग्र राजस्थान की प्राचीन, प्रामाणिक एवं पुख्ती परिपक्व जानकारी दे हर सम्भव सहयोग, मार्गदर्शन तथा समस्याओं का समाधान दिया।

सांस्कृतिक यात्राओं पर सार्थक संगोष्ठी

जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी भोपाल के तत्वावधान में हरदा जिले के नेमावर गांव में 8 से 10 अक्टूबर 2022 को आयोजित राष्ट्रीय प्रदक्षिणा संगोष्ठी विद्वानों के गंभीर विचारों के साथ यादगार बन गई। इसमें सभी सत्रों में प्रदक्षिणा के कई आयाम प्रकट हुए जिनमें साधु ,संत, महंत तथा विद्वानों ने विद्वत्तापूर्वक भाग लिया। तीन दिन नर्मदा नदी की गोद में यह आयोजन था। लोगों ने नदी, पहाड़, मंदिर आदि की पैदल, नौका आदि से प्रदक्षिणा की।

इसमें समापन अवसर पर उदयपुर से आए साहित्यकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने कहा कि भारत सदियों से नदियों का देश रहा है। यहां के हर एक गांव में यात्रा होती है। प्रदक्षिणा की अपनी संस्कृति है। हर दान एक परिक्रमा के साथ दिया जाता है। विवाह में सप्तपदी होती है। परिक्रमा का क्रम दक्षिण से होता है।

भगवान नारायण के हाथ में जो आयुध है, उसका क्रम ही प्रदक्षिणा जैसा है। शिव की परिक्रमा आधी होती है। गणेशजी की कहीं तीन तो कहीं 21 तक परिक्रमा होती है।

अकादमी के निदेशक डॉ. धर्मेंद्र पारे ने तीनों ही दिन भारत की नदियों से लेकर तीर्थ यात्रा और देव संस्कृति को परिभाषित किया। उनके साथ मुकेश मिश्रा, डॉ. ज्ञानेश चौबे, दीपू महाराणा, राहुल तिवारी, राजेश मालवीया आदि जुटे रहे। पहले दिन इस विषय पर केंद्रित चौमासा के विशेष अंक का विमोचन हुआ।

संगोष्ठी के रूप में ऐसा मौलिक -सांस्कृतिक एवं जमीनी कार्य बहुत कम दिखाई देता है। सभी सांस्कृतिक एवं जमीनी तत्त्वों से संस्कृति को जोड़ने का सार्थक कार्य लगता रहा।

प्रस्तुति : डॉ. श्रीकृष्ण

वह अविस्मरणीय मुलाकात डॉ. महेन्द्र भानावतजी से

- दीनदयाल शर्मा -

इक्कीस वर्षों बाद झीलों की नगरी उदयपुर जाना हुआ। यहां राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की ओर से बच्चों के लिए बालसाहित्य निर्माण की कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में राजस्थान के चुनिंदा शिक्षकों और बालसाहित्यकारों को आमंत्रित किया गया।

कार्यशाला में लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व परिचित आकोला के बालसाहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' से हुई आत्मीय मुलाकात के दौरान उन्होंने कहा कि मैं आपको उदयपुर के कुछ दर्शनीय स्थलों के बाद देश के ख्यातनाम साहित्यकार डॉ. महेन्द्र भानावतजी से भी मिलवाऊंगा। कार्यशाला समापन के बाद हम 08 अक्टूबर, 2022 को डॉ. भानावतजी से मिलने का दिन तय कर उनसे समय भी ले लिया।

सुबह ही हम हॉस्टल से चैकआउट होने के बाद कार द्वारा शहर देखने निकल पड़े। झीलों की नगरी उदयपुर उत्तरभारत का सबसे आकर्षक पर्यटक शहर माना जाता है। यह शहर चारोंओर से सुन्दर अरावली पहाड़ियों से घिरा हुआ वाकई विश्व के सुन्दरतम शहरों की खूबसूरती लिये है।

पानी से थबोले खाती फतहसागर झील अपने चारोंओर की प्रदक्षिणा से और पीछोला झील के किनारे प्राचीन राजमहलों का सौंदर्यजनित शकुन भी बहुत आकर्षक है। प्रत्येक व्यक्ति को बरबस ही अपनी ओर खींच लेता है।

बादलों से भरा आसमान लिए आज भी बहुत रोमांचक रहा। चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां और इधर-उधर घूमते देशी-विदेशी सैलानी। झील की चारदीवारी पर बैठा एक लोककलाकार जो रावणहत्थे की संगीत-ध्वनियां बिखेर रहा था, वहीं दूसरी ओर सजे हुए ऊंट, घोड़े, बग्घी और मन-मयूरी ठण्डी बयार वातावरण को और भी रोमांचित कर रही थी।

डॉ. भानावतजी से मिलने के लिए हम दोनों पूर्ण पते के अभाव में घण्टे भर उनका घर तलाशते उनके घर के आसपास ही चक्कर काटते रहे। तभी मुख्य सड़क पर खड़े एक सज्जन पर हमारी नज़र पड़ी, जिनकी आँखें भी शायद हमें तलाश रही थीं। वे ही डॉ. महेन्द्र भानावतजी थे। ओजपूर्ण चेहरे पर मधुर मुस्कान, पारखी दृष्टि, गठीला शरीर एवं छोटे कद के बड़े रचनाकार। उनसे मिलकर लगा ही नहीं कि यह हमारी पहली मुलाकात है।

सीढ़ियों के रास्ते फर्स्ट फ्लोर पर लगभग आठ-बाई दस फुट की बैठक। सोफे और मेज के अलावा पुस्तकों की सजी अलमारी। बैठक के कोनों में लकड़ी के तीन हाथी और पांच शेर। दीवारों पर टंगी लोककला से जुड़ी अनेक पेंटिंग्स। घर की लॉबी में डाइनिंग टेबल-कुर्सियों के अलावा दीवारों पर दस्तक देती कलात्मक निधियों की सन्निधियां। एक कोने में शीशे के फ्रेम में जड़ी लगभग साढ़े चार फुट की धर्मराजजी की मृणमूर्ति। बताया कि सबसे पहले दो अंधे कुम्हारों से देवी ने छाया देकर यह मूर्ति बनवाई और जगह-जगह गांवों में देव-देवरे स्थापित कराये। ऐसे कलाप्रेमी डॉ. भानावतजी का जुनून देखकर मन उनके प्रति नत मस्तक हो गया।

चाय की चुस्की लेते हुए डॉ. भानावतजी बोले- पहले आपका बाल-अखबार 'टाबर टोली' मेरे यहां आता था। फिर न जाने क्यों, आना बंद हो गया। मैं बोला- कोरोना काल में संख्या काफी कम हो गई और डाक से भेजने वाले अंकों में भी कमी आ गई। आपको फिर से भिजवाता हूं। इतना कहकर मैंने उनके कृतित्व के बारे में जानना चाहा। सो मैंने उनसे सवाल करने शुरू किए।

दीद : डॉ. साहब, आपका तो पूरे देश में नाम है। खूब लिखा है आपने और अब भी लिखते ही रहते हैं। लिखने की शुरूआत कब की थी?

डॉ. भानावत : जब चौथी कक्षा में पढ़ता था तभी से यानी दस वर्ष की उम्र से।

दीद : वॉव, इसका मतलब आपको लिखते हुए साठ-पैंसठ साल हो गए!

डॉ. भानावत : (हँसते हुए) पैंसठ नहीं, पिचहतर। यानी मैं पिच्यासी का हूं। मेरी जन्मतिथि 13 नवम्बर, 1937 है। मेरी दिनचर्या ऐसी है कि मैं व्यस्त रहता हूं और बीते कल को याद नहीं रखता। जो बीत गया, सो बीत गया। आगे की सोचता हूं और ऐसा लिखने की कोशिश करता हूं जो कि पहले किसी ने लिखने का प्रयत्न नहीं, तो भी किया हो।

दीद : आपकी अब तक कितनी रचनाएं छप चुकी हैं?

डॉ. भानावत : देश-विदेश की लगभग पांच सौ पत्र-पत्रिकाओं में करीबन 10,000 से अधिक रचनाएं और 101वीं पुस्तक इस वर्ष आई है।

दीद : कुछ किताबें तो आपने बच्चों के लिए भी लिखी होंगी?

डॉ. भानावत : बिल्कुल, बच्चों के लिए भी खूब लिखा है। बच्चों के लिए मेरी कई किताबें हैं। यथा- सवा हाथ का गंगाराम, साब का टोकर, अनोख कुंवर, यति का चमत्कार, साब और सर्टिफिकेट, हम ऐसे बनें, आँखों का प्रकाश, देखते चलो, कंकू कन्या, नाचो कूदा हो हो, राजा राज करे, पूरे कुएँ भांग। इनके अलावा मेरी दो बाल पुस्तकें इन राजनजी ने ही प्रकाशित की हैं- गवरी और कठपुतली। बालसाहित्य को रचना की गहराई से ये जी ही नहीं रहे, अन्यों को भी प्रकाश दे रहे हैं।

दीद : डॉ. साहब, आपको मुंबई, लखनऊ, भोपाल, जयपुर, उदयपुर आदि अनेक शहरों में बहुत ही मान-सम्मान और पुरस्कार मिले हैं।

दीनदयाल शर्मा, डॉ. महेन्द्र भानावत और राजकुमार जैन 'राजन'

डॉ. भानावत : पुरस्कार के पीछे भागमभाग नहीं हो। जिन्होंने दिया उनको नमन। मजा तो तब है जब पुरस्कार हमारे पीछे भागें। आप लेखन करते रहें। मिलना-जुलना होता रहेगा।

दीद : लेखन को लेकर कोई संस्मरण?

डॉ. भानावत : मैंने देश की सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं के लिए जो लिखा, वह छपा। मेरे कई आलेख 'धर्मयुग' में छपे जो बेहद चर्चित रहे और समझिये विश्व-ख्याति भी मिली।

दीद : किस तरह के आलेख?

डॉ. भानावत : लीक से हटकर। जैसे भूतों का मेला, दिव्य आत्माओं का मेला, हरियाली अमावस्या का मेला। ये ऐसे आलेख हैं, जिन पर तत्काल ही कोई भरोसा नहीं कर सकता। बावजूद इसके 'धर्मयुग' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में अपना स्थान बनाया और चर्चा अब भी हो रही है।

मूठ पर लिखे मेरे आलेख को पढ़कर एक मठाधीश मिलने आया। उसका मठ हथिया लिया था सो वह मूठ-विद्या की तंत्र-साधना से उसका मटियामेट करना चाहता था। खैर।

दीद : और कोई संस्मरण?

डॉ. भानावत : एकबार एक पाठक का पत्र आया कि मेरी बीमार पत्नी का बहुत से डॉक्टरों से सब तरह का इलाज कराकर हार गया। मैंने लोकदेव कल्लाजी राठौड़ का स्मरण कर उनकी भभूत को लच्छे के लगाते हुए नौ गांठें लगाईं और उसे डाक से भेज दिया।

दीद : वाह, बहुत खूब। अन्य रचनाकार के साथ का कोई संस्मरण?

डॉ. भानावत : 1984 में धर्मयुग के संपादक धर्मवीर भारतीजी को यहां महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन की ओर से हल्दीघाटी सम्मान दिया गया। मुझे भी महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार मिला। मैं भारतीजी को हल्दीघाटी ले गया। रक्ततलाई पहुंचते ही बोले- भानावतजी, यहां कदम रखते ही मेरे शरीर में कुछ अजनबी प्रतिक्रिया महसूस हो रही है। मैंने कहा, यहीं युद्ध हुआ तो उस धरती दण्डवत किया। कुछ मिट्टी उठाकर कागज की पुड़िया बनाई और अपनी जेब में रख ली। बाद में मुझे लिखा- जिस सरस्वती की मैं पूजा करता हूं उसके साथ इस मिट्टी की भी पूजा हो रही है।

राजन : ऐसे संस्मरण शायद ही किसी के हों। आप सुनते जाइये, पता ही नहीं चलेगा, समय थम गया है।

डॉ. भानावत : जब 'धरती धोरां री' के कवि कन्हैयालाल सेठियाजी को महाराणा मेवाड़ का सम्मान मिला तो उन्हें भी मैं हल्दीघाटी ले गया और वहां उन्हें चारों तरफ पत्थर की ऊंची-ऊंची पहाड़ियां दिखाते हुए उनकी हथेली दबाई और मुस्कुराते हुए कहा- यहां तो पत्थर ही पत्थर हैं। आपने तो 'धोरां री धरती' बताकर सारे राजस्थान की रगड़पट्टी कर दी। सेठियाजी चुप-मौन-गम्भीर हो गये। मैंने उन्हें छोड़ा नहीं तब बहुत धीरे से बोले- भानावतजी, मेवाड़ में पहले यह सब देख लेता तो वैसा नहीं लिखता।

दीद : राजन ने बताया कि भारतीय लोककला मण्डल से आप 1995 में निदेशक पद से सेवानिवृत्त हो गए। सबसे पहले राजन वहीं ले गये। जो लीला उन्होंने आपके रहते देखी, अब खामोश है। तभी एक गाइड मिल गया। उसने बताया कि पहले 43 कर्मचारी काम करते थे और अब 16 कर्मचारी ही शेष हैं।

अब कोई हुसैन इसके निदेशक हैं। अध्यक्ष हैं सलिल सिंघल, धन्नासेठ। (व्यथित मन से) अब वो बात कहां। लोककला अब कला का लोक भी नहीं रहा। यहां देवीलाल सामर दुनियां के पहले व्यक्ति थे जो लोककला को समर्पित थे। लोककलाओं के उन्नयन, उद्धार, प्रचार-प्रसार, प्रकाशन और लोककला से जुड़े ऐसे लोगों को ढूंढ़ते महेन्द्र भानावत को लाये जिन्होंने सामरजी के साथ इसे विश्वख्याति दिलाई। कठपुतलीकला और लोकनृत्यों में सर्वोच्च पुरस्कार मिले। सामरजी पद्मश्री हुए। अब तो उनका नामलेवा भी नहीं।

बच्चों और युवाओं को संदेश देने के सवाल पर भानावतजी बोले, हम तो खुद ही बच्चे से बड़े हुए हैं फिर भी कहना चाहूंगा कि वे संघर्षशील बनें। संस्कारवान बनें। चुनौतियों को ग्रहण करें। अपने में देश-सेवा का भाव भरते अपने कर्म द्वारा पहचान बनायें।

दो घंटे की यह मुलाकात मेरे और राजन भाई के लिए अविस्मरणीय बन गई। कुछ और मित्रों से भी मिलना था, लेकिन यहां भी सच कहें तो हमारा मन नहीं भरा। इच्छा थी कि कुछ और बात करें पर समय ने इजाजत नहीं दी। विदाई के समय उन्होंने मुझे राजनजी द्वारा प्रकाशित 'गवरी' और 'कठपुतली' भेंट स्वरूप प्रदान की। इस स्मृति को कैमरे में क़ैद किया उनके सुपुत्र डॉ. तुक्तक भानावत ने।

पिम्स में टॉपिकल फेको की शुरुआत

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरडा, में पहली बार की शुरुआत की गई है। इसमें बिना टीका, बिना चीरा, बिना टाँका और ऑपरेशन के बाद बिना आँखों की पट्टी के जापानी फेको मशीन से मोतियाबिंद का सफल इलाज किया जा रहा है।

पिम्स के चैयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने बताया कि इस ऑपरेशन में मरीज को कोई दर्द और परेशानी नही होती है और नजर में भी तुरन्त सुधार हो जाता है। कोई सूजन नही आती और मरीज अपने रोजमर्रा के काम अगले दिन से शुरु कर सकता है। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. नितिन सिंह ने बताया कि इस ऑपरेशन में सिर्फ 7 से 10 मिनट का समय लगता है और मरीज अपने घर वापिस लौट सकता है। पिम्स में मरीजों को यह सुविधा नि:शुल्क उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा काला मोतिया, भैंगापन, मधुमय से आँखों के परदे, नासूर, आँखों की झिल्ली सहित और भी ऑपरेशन किये जा रहे हैं।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।
shabdranjanudr@gmail.com

बाजार / समाचार

आसियान-भारत कलाकार शिविर के दूसरे संस्करण का उद्घाटन

उदयपुर (ह. सं.)। आसियान-भारत के वार्ता संबंधों के 30 साल पूरे होने का जश्न मनाने के लिये विदेश मंत्रालय (एमईए) और सेहर ने आसियन-भारत कलाकार शिविर के दूसरे संस्करण का उद्घाटन नई दिल्ली के ताज एम्बेसडर में किया गया। सचिव (ईस्ट) विदेश मंत्रालय सौरभ कुमार मुख्य अतिथि थे और विदेश मंत्रालय के अधिकारी, भारत में आसियान मिशनों के राजदूत और अतिथि उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का विषय, 'ओशन ऑफ कनेक्टिविटी' है, जो समंदर को परिभाषित करता है, जिससे कि आसियान देश जुड़े हुए हैं। शिविर में लाकारों के लिये कई अंतरविषयक गतिविधियों को भी शामिल किया जाएगा जो उन्हें भारत की कला और परंपराओं के अन्य रूपों से अवगत कराएंगे।

विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) सौरभ कुमार ने कहा कि यह कलाकार शिविर,10 आसियान देशों और भारत की रचनात्मक ऊर्जा को एकजुट करने की एक महत्वपूर्ण युवा-केंद्रित गतिविधि है, जैसा कि हम आसियान भारत वार्ता संबंधों की 30वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। सेहर के फाउंडर डायरेक्टर संजीव भार्गव ने कहा कि यह कैम्प उदयपुर में आयोजित किया जाएगा, जहाँ कलाकार अपनी कलाकृति तैयार करेंगे, एक-दूसरे के साथ समय बिताएंगे और आपस में विचार साझा करेंगे। ये लोग हिस्सा लेने वाले सभी देशों की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत से रू-ब-रू होंगे। शिविर उदयपुर के ताज अरावली रिजॉर्ट में आयोजित होगा।

मेलोरा द्वारा चार फेस्टिव कलेक्शन्स लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। मेलोरा जो किफायती दामों पर आधुनिक लाईटवेट, बीआईएस हॉलमार्क्ड सोने के आभूषण उपलब्ध कराता है, ने भारत, यूएई, यूएसए, यूके और यूरोप में 26,000 से अधिक पिनकोड्स तक डिलीवरी का लक्ष्य हासिल कर लिया है और कंपनी लगातार अपना विस्तार कर रही है।

सरोजा येरामिली, संस्थापक एवं सीईओ, मेलोरा ने कहा कि त्योहारों के अवसर पर, ब्राण्ड हर शुक्रवार को सोने और हीरे के 75 से अधिक डिजाइनों का नया कलेक्शन लॉन्च करेगा। कंपनी ने त्योहारों के मद्देनजर अपने नए विज्ञापन 'हर घर मेलोरा' को भी रिलीज किया। अपने फेस्टिव कलेक्शन के तहत मेलोरा चार नए कलेक्शन लॉन्च करेगा जो त्योहारों के जोश और उत्साह को कई गुना बढ़ा देंगे। ब्राण्ड के 23 एक्सपीरिएंस सेंटर हैं और वित्तीय वर्ष 26 के अंत तक देशभर में स्टोर्स की संख्या 350 तक पहुंचाने की योजना है।

प्रेस्टीज एक्सक्लूसिव फ्लैगशिप स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। टीटीके प्रेस्टीज, भारत के सबसे बड़े और सबसे पसंदीदा किचन अप्लाय यंस ब्रांड, ने उदयपुर के शक्तिनगर में अपना पहला मल्टी-कैटगरी एक्सक्लूसिव फ्लैगशिप स्टोर खोला है। इस स्टोर में एक ही छत के नीचे 27 कैटगरीज में 700 उत्पादों की व्यापक रेंज प्रदर्शित की गई है। टीटीके प्रेस्टीज लि. के एक्जीनक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट सेल्स और मार्केटिंग दिनेश गर्ग ने इस स्टोर का उद्घाटन किया।

दिनेश गर्ग ने कहा कि टीटीके प्रेस्टीज ने उदयपुर में अपने पहले स्टोर में लगभग 350 से अधिक एसकेयू डिस्ले किए हैं, जहाँ उपभोक्ता नए-नए इनोवेटिव उत्पादों के लाइव डेमो का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ प्रदर्शित उत्पाद-श्रेणियों में स्टेनलेस स्टील के प्रेशर कुकर, ट्राई-प्लाई प्रेशर कुकर, ग्रेनाइट कुकवेयर, ग्लास टॉप गैस स्टोव्स, इंडक्शन कुकटॉप्स, मिक्सर ग्राइंडर के अलावा केतली जैसे छोटे उपकरण, आदि उत्पादों की विशिष्ट रेंज शामिल हैं।

'बेस्टिवल सेल' के शुभारंभ की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। रिलायंस रिटेल के जियोमार्ट और स्मार्ट स्टोर्स ने 24 अक्टूबर तक दीवाली के सबसे बड़े उत्सवों में से एक, 'बेस्टिवल सेल' के शुभारंभ की घोषणा की, जो फैशन एवं लाइफ़स्टाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, होम एंड किचन सहित कई नई श्रेणियों में इस ई-मार्केटप्लेस के तेज गति से विस्तार को दर्शाता है। कंपनी के ई-मार्केटप्लेस प्लेटफॉर्म, यानी जियोमार्ट के साथ-साथ देशभर में मौजूद बाज़ार, स्मार्ट सुपरस्टोर और स्मार्ट प्वाइंट सहित 3000 से ज़्यादा स्मार्ट स्टोर्स पर इस सेल का आयोजन किया जाएगा।

दामोदर मॉल, सीईओ, ग्रॉसरी रिलायंस रिटेल, ने कहा कि बीते दो सालों के दौरान स्मार्ट स्टोर्स ने वैल्यू शॉपिंग, डेस्टिनेशन शॉपिंग तथा सुलभ खरीदारी जैसे फॉर्मेट में अपने दायरे को बढ़ाया है। देशभर में बड़ी संख्या में मौजूद फिजिकल स्टोर्स, मजबूत पार्टनर नेटवर्क, सोर्सिंग की क्षमता और 20 करोड़ से अधिक पंजीकृत ग्राहकों को सेवाएँ उपलब्ध कराने के अनुभव का लाभ उठाते हुए, बेस्टिवल सेल के दौरान दीवाली के उत्सव के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं, सामान्यतौर पर इस्तेमाल होने वाले सामानों, कपड़ों, ब्यूटी प्रोडक्ट्स तथा इलेक्ट्रॉनिक्स पर सबसे शानदार ऑफ़र्स, डील्स, बैंक टाई-अप औरविशेष छूट की पेशकश की जा रही है, जो जियोमार्ट के माध्यम से ऑनलाइन तथा आपके नजदीकी स्मार्ट स्टोर्स पर उपलब्ध है। ग्राहक सभी श्रेणियों में 80 प्रतिशत तक की छूट पा सकते हैं, साथ ही त्योहारों के इस मौसम में दीयों, मोमबत्तियों, उपहारों, मिठाइयों, स्नैक्स औररंगोली के बेहद सावधानीपूर्वक उपलब्ध कराए गए कलेक्शन में से अपनी जरूरतों के अनुरूप सामानों की खरीदारी पर दिवाली स्पेशलडील्स का फायदा उठा सकते हैं। इसके अलावा, वे भारतीय मिठाइयों और ड्राइ फ्रूट्स गिफ्ट पैक पर 50 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं।

कानोड़ मित्र मंडल का वर्षाकालीन मैत्री समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर में निवासरत कानोड़वासियों के मंत्री संगठन कानोड़ मित्र मंडल उदयपुर का वर्षाकालीन स्नेहमिलन अंबेरी स्थित ग्रीन रॉयल रिसोर्ट में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कनकप्रसाद व्यास, मुख्य अतिथि डॉ. राजमल लखदार एवं विशिष्ट अतिथि रूपलाल नागोरी एवं कार्यक्रम संरक्षक प्रख्यात योग एवं डाइट विशेषज्ञ मदन मोदी थे।

समारोह में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. महेंद्र भानावत, उपकार मसाले एवं रूट्स के डायरेक्टर कुतुबुद्दीन बोहरा, सुंदरलाल अलावत, हिम्मतसिंह पोखरना, सोहनलाल भानावत, धर्मचंद नागोरी, भगवतीलाल भाणावत की उपस्थिति ने कार्यक्रम को अविस्मरणीय गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण 'वाह भाई वाह' फेम प्रसिद्ध हास्यकवि सिद्धेश्वर सिद्धू थे जिन्होंने अपनी कविताएं से सुना कर सभी को लोटपोट कर दिया।

महामंत्री दिलीपकुमार भानावत ने बताया कि कार्यक्रम में 32 प्रतिभाओं, भामाशाहों, मित्र मंडल के पूर्व अध्यक्ष एवं महामंत्रियों सहित समाजसेवियों को सम्मानित किया गया। इस दौरान कई सारी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 360 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

मित्र मंडल के अध्यक्ष हिमांशुराय नागोरी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में जीवनसिंह पोखरना, संजय अलावत, कोमल वया, त्रिभुवनसिंह राव, श्रीमती गरिमा बाबेल, श्रीमती सरोज सोनी, निर्मल धींग, दिनेश नंदावत, अनिल पुरोहित, मनोज दक, तेजसिंह पोखरना, सोहनलाल कोठारी, लोकेश बाबेल, इकबाल बोहरा, विनोद जारोली एवं गिरिराज सोनी का उल्लेखनीय योगदान रहा।

उदयपुर में नई डीलरशिप फैसिलिटी का उद्घाटन

उदयपुर (ह. सं.)। जेसीबी इंडिया ने राजेश मोटर्स के लिए उदयपुर में नई डीलरशिप फैसिलिटी का उद्घाटन किया। इस फैसिलिटी का उद्घाटन जेसीबी के अध्यक्ष लॉर्ड बैमफोर्ड की उपस्थिति में किया गया।

यह नई 3एस इंटीग्रेटेड फैसिलिटी 24,000 वर्ग फुट में बनी हुई है। कुल 38,000 वर्ग फुट में फैली हुई इस सुविधा में करीब 175 लोग कार्यरत हैं। वर्कफोर्स में सेल्स, सर्विस और पुर्ज सप्लाई के लिए कुशल टीम हैं। वर्ल्ड क्लास कस्टमर एक्सपीरियंस और प्रोडक्ट सपोर्ट प्रदान करने के लिए इस फैसिलिटी में लाइवलिंक कमांड सेंटर के साथ 12-बे इंटीग्रेटेड सर्विस वर्कशॉप भी है। जेसीबी कस्टमर्स को, प्रोडक्ट सपोर्ट देने के लिए सभी फैसिलिटी एक छत के नीचे उपलब्ध होगी जिसमे वेल्डिंग, बोरिंग, इंजन, ओवरहाल इत्यादि शामिल है। ग्राहकों के फैसिलिटी के लिए, राजेश मोटर्स उदयपुर में बूम, डिपर, लोडर आर्म और किंग पोस्ट कैरिएज के लिए लाइन बोरिंग की क्षमता भी होगी।

लॉर्ड बैमफोर्ड ने कहा कि राजेश मोटर्स 1989 से हमारे डीलर हैं और हमें इस नई फैसिलिटी का उद्घाटन करते हुए बेहद खुशी हो रही है। भारत में बेशुमार अवसर हैं और जेसीबी इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में योगदान देना जारी रखेगा, इस प्रकार रोजगार, आजीविका और विकास के अवसर का सृजन करेगा ।

जेसीबी इंडिया के सीईओ और प्रबंध निदेशक दीपक शेट्टी ने कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के अलावा, माइनिंग उदयपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों में विकास का एक प्रमुख उत्प्रेरक है। यह नई फैसिलिटी जेसीबी ग्राहकों के लिए वर्ड-क्लास ओवनरशिप का अनुभव देगी। राजेश मोटर्स के डीलर प्रिंसिपल सीएच शाह ने कहा कि हम इस नई फैसिलिटी के साथ उदयपुर में जेसीबी ब्रांड को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

तारा संस्थान के चौहान को राज्यस्तरीय सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर आयोजित सम्मान समारोह में तारा संस्थान के निदेशक (कार्मिक/प्रशासन) विजयसिंह चौहान को वृद्ध कल्याण, सांस्कृतिक, कला, सामाजिक एवं साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी आशुलिपि विषय पर लिखी गई 11 पुस्तकों पर प्रतीक चिह्न, प्रमाणपत्र एवं शॉल से राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली ने सम्मानित किया। इस अवसर पर समाज कल्याण विभाग के सचिव सुमित शर्मा, उप-सचिव हरिमोहन मीणा एवं अध्यक्ष गोपालसिंह शक्तावत भी उपस्थित थे।

जलवायु परिवर्तन पर जागरूकता कार्यक्रम

उदयपुर (ह. सं.)। जलवायु परिवर्तन से देशों और बड़े भू भाग में सैकड़ों साल में जो एक औसत मौसम था वह अब बदल रहा है। पिछले कुछ दशकों से बारिश का ढंग बदल रहा है। अत्यधिक वर्षा, बादल का फटना, गर्मी का मौसम लम्बा होना, तापमान में लगातार वृद्धि, सर्दी का मौसम छोटा होना और अत्यधिक ठंड, ऐसा पूरी दुनिया में हो रहा है। ये विचार अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता ने वागड़ा जलग्रहण स्थित हथनियावल गांव के रा.उ.प्रा. विद्यालय में बालसभा के दौरान व्यक्त किये।

पर्यावरण विशेषज्ञ दर्पण छाबड़ा ने बताया कि जलवायु परिवर्तन से हो रहे बदलावों एवं प्रभावों को अपनाने के लिए हमें तैयार रहना होगा। इसके प्रभावों को कम करने के लिए पारंपरिक कृषि, नवीन तकनीक, सौर ऊर्जा, जल संरक्षण के साथ-साथ बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली, उन्नत बीज एवं जैविक कृषि को अपनाना होगा। प्रधानाध्यापक रामलाल बेरवा ने बताया कि सभी छात्रों को घर, खेत, विद्यालय में वृक्षारोपण कर जल संचयन करना होगा। इस अवसर पर अलर्ट संस्थान द्वारा जलवायु परिवर्तन विषय पर तैयार की गई पुस्तिका, 'जलवायु परिवर्तन प्रभाव, अनुकूलन एवं शमन' वितरीत की गई। यह पुस्तक रा.उ.प्रा. विद्यालय वागड़ा, हथनियावल, अवाणी, वली की भागल एवं पानेर में उपलब्ध कराई गई। धन्यवाद की रस्म मगनाराम परमार ने अदा की। कार्यक्रम में हथनियावल विद्यालय के अध्यापक, वागड़ा विद्यालय के किशनसिंह राजपूत एवं अध्यापकों की महत्त्वपूर्ण भागीदारी रही।

कोटक महिंद्रा बैंक का उत्सव धमाका

उदयपुर (ह. सं.)। कोटक महिंद्रा बैंक लि. ने खुशी का सीज़न की पांचवीं किश्त के तहत ढेर सारे ऑफ़र के शुभारंभ की घोषणा की।

ग्रुप प्रेसिडेंट एंड हेड-कंज़्यूमर विराट दीवानजी ने कहा कि कोटक महिंद्रा बैंक अपने ग्राहकों को खानपान, यात्रा, ऑनलाइन फैशन, किराना सामान, खुदरा स्टोर, आभूषण, मॉल, ऑनलाइन डिलीवरी, स्वास्थ्य सेवा और घरेलू सेवाओं जैसी विभिन्न श्रेणियों के कई ब्रांडों पर 10,000 से अधिक ऑफ़र दे रहा है। ग्राहक केएमबीएल डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड पर उपलब्ध ईएमआई विकल्पों की मदद से सैमसंग, ओप्पो, शाओमी, आईएफबी जैसे विभिन्न ब्रांडों के तरह-तरह के इलेक्ट्रॉनिक्स सामानों और स्मार्टफोन जैसे कई अलग-अलग उत्पादों की खरीदारी कर सकते हैं। केएमबीएल की 'एवरीडे स्पेशल' के तहत सातों दिन 10 से अधिक ब्रांडों पर ऑफर उपलब्ध हैं।

त्रिवेणी कला संग्रहालय.....

(पृष्ठ एक का शेष)

(4.2.61.22) शङ्ख माधव तीर्थ का संक्षिप्त माहात्म्य, (4.2.84.8) शङ्ख तीर्थ का संक्षिप्त माहात्म्य, (4.2.84.27) शङ्ख माधव तीर्थ का संक्षिप्त माहात्म्य, (4.2.97.178) शङ्ख-लिखितेश्वर लिङ्ग का संक्षिप्त माहात्म्य-महाज्ञानप्रवर्तक, (5.1.27.23) कृष्ण द्वारा पञ्चजन को मारने से शङ्ख की प्राप्ति, (5.1.27. 118) शङ्खी विष्णु के लिए गो दक्षिणा का निर्देश, (5.1.32.44,53) सूर्य प्रतिमा स्थापना के संदर्भ में स्तोत्र से पूर्व शङ्खनाद का उल्लेख, (5.1.44.12) पाञ्चजन्य : समुद्र से उत्पन्न 14 रत्नों में से एक, विष्णु के कर में स्थिति, (5.3.178.24) गङ्गा द्वारा विष्णु के कर में स्थित शङ्ख का प्लावन करने पर पापों से शं प्राप्ति का कथनय शङ्खोद्धार तीर्थ का लक्षण व महत्त्व, (5.3.198.86) शङ्खोद्धार तीर्थ में देवी की ध्वनि नाम से स्थिति का उल्लेख, (6.10.22) शङ्ख तीर्थ का माहात्म्य, चमत्कार नृप की कुष्ठ से मुक्ति, (6.11) शाण्डिल्य-पुत्र, अग्रज लिखित द्वारा हस्त कर्तन का प्रसंग, शिव कृपा से पुन: हस्त प्राप्ति, चमत्कार नृप की कुष्ठ से मुक्ति, (6.111) आनर्त अधिपति का शङ्ख तीर्थ में कुष्ठ से मुक्त होना, (6.209) शङ्ख तीर्थ का माहात्म्य, कुष्ठ से मुक्ति, लिखित द्वारा शङ्ख अनुज के हाथ काटने पर शङ्ख का तप, शिव कृपा से हस्त प्राप्ति, (7.1.116) शङ्खोदक कुण्ड का माहात्म्य, शङ्खावती / कुण्डेश्वरी देवी का वास, शङ्ख असुर की देह के प्रक्षालन से उत्पत्ति, (7.1.335) (शङ्खावर्त तीर्थ का माहात्म्य, शङ्ख के वध का स्थान, इसके अलावा हरिवंश पुराण में भी है। उसके (1.15.32) में वज्रनाभ-पुत्र, उपनाम व्युषिताश्व, पुष्प-पिता, (2.58.59) निधिपति शङ्ख का कृष्ण के आदेश से द्वारका में आकर वास करना, (3.35.36) वराह द्वारा स्थापित पर्वतों में से एक, महाभारत भीष्म (25.15) पाञ्चजन्यं हृषीकेशो इत्यादि, शल्य (61.71) अर्जुन आदि द्वारा देवदत्त आदि शंखों का ध्मापन, तु. भीष्म (25.15)।

वाल्मीकि रामायण (7.15.16) में कुबेर के साथ शङ्ख व पद्म की स्थिति का उल्लेख मिलता है। लक्ष्मीनारायण संहिता (1.230.1) में द्वारका में शङ्खोद्धार तीर्थ का माहात्म्य है, (1.406.15) हैहयवंशी राजा शङ्ख द्वारा कृष्ण के दर्शन हेतु तप का वृत्तान्त, (2.157.40) शङ्ख का लिङ्ग व वृषण में न्यास, (2.185.65) में शङ्ख के आदेश से भ्राता लिखित के हाथों का राजा द्वारा कर्तन, हाथों का पूर्ववत् होना, (2.244.80) में ब्रह्मदत्त द्वारा विप्र को शङ्ख निधि दान का उल्लेख, (3.142.12) में शङ्ख सर्प के शनि, राहु व कुलिक ग्रहों का कथन है। (3.151.94) में शङ्ख व महाशङ्ख निधियों के स्वरूप है। कथासरित् सागर (12.7.72) में शङ्खदत्त का नाम है। आगे (12.7.77) शंखध्वनि वाले अश्व का उल्लेख) और फिर (13.1.84) शङ्खपुर का उल्लेख है। गोपालोत्तरतापिन्युपनिषद (2.2.25) पञ्चभूतात्मक शंख।

और भी अनेक संदर्भ हैं। एक ढपोर शंख ने हमसे कह दिया है उनके पास 'शंखसंहिता' रखी है। बात पलटे, उससे पहले मैं घर जा धमका तो उसका तो जैसे शंखाढार ही हो गया। बहुत सच है कि बचपन से जो बाजा हमें लुभाता था, वह शंख था और घर में ही बजते देखा था। अखाड़े पर जाने लगा तो आरती के दौरान बजाने का अभ्यास किया।

अनुभव से लगा.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

उदयपुर के दक्षिणांचल आदिवासी बहुल क्षेत्र बांसवाड़ा के घने जंगल में एक दिन गर्मी के दिन लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के अनन्य सेवक वीरकेसरी सरजुदासजी वैष्णव के साथ मैं, डॉ. सुधा गुप्ता तथा लोकगायक रामनारायण एक वृक्ष की गहरी छाया में अपनी तपन बुझा रहे थे कि हमें कल्लाजी बावजी की याद हो आई। रामनारायण ने तो अपनी ओजस्वी वाणी में देवता का आव्हान शुरू किया। वह हेला-पर-हेला दिये जा रहा था। इतने में देवता का बापूजी सरजुदासजी के शरीर में पदार्पण हुआ। हम खुद भी चकित रह गये।

बावजी ने उस खरी तपती दुपहरी में दरसन देते ही कहा, 'ऐसी तपती लाय में यहां क्योंकर मुझे याद किया। मैं भी कहीं संकट में पड़े हुए जीवों के बीच में उन्हें बचाने का काम कर रहा था।' हमें लगा कि ऐसी मुसीबत के समय हमें बावजी को यहां पधारने का कष्ट नहीं देना था लेकिन हम भी इस वीरावान जंगल में भटकी ही खा रहे थे सो बावजी के दर्शन कर हमें बड़ा आत्म-संतोष हुआ।

लोकदेवता की मान्यता प्रत्येक जाति-बिरादरी में है। आदिवासियों में यह मान्यता-आस्था अटूट-श्रद्धा और विश्वास लिये है। ये लोकदेवी-देवता विभिन्न नामी हैं।

प्रत्येक गांव तथा शहर में इनके विशेष स्थान, देवरे, मन्दिर हैं जहां अधिकांश में रविवार को चौकी लगती है तब देवता द्वारा निर्धारित व्यक्ति जो भोपा नाम से जाना जाता है। उसमें देवता की छाया अर्थात् भाव आता है। रात्रिजागरण तथा नवरात्रा पर विशेष अनुष्ठान के साथ देवता की सेवा-पूजा एवं गीत-गाथाओं का सामूहिक गान-वादन होता है। इन देवताओं के जीवन चरित्र से जुड़ी गाथाओं का गायन होता है जिन्हें 'भारत' गान कहते हैं। इस गान-गावणी के साथ ढाक नामक वाद्य बजाया जाता है अत: इन्हें 'ढाकभारत' भी कहते हैं।

ऐसी भारत-गाथा के विशेष अध्ययन के लिए विविध स्थानों की मैंने कई यात्राएं कर भारतीय लोककला मण्डल में 25 देवी-देवताओं की गाथाएं रेकार्डिंग की। उनके नाम हैं- (1) बड़ल्या रो भारत (2) पूरबज रो भारत (3) पांडवां रो भारत (4) रांगड्या रो भारत (5) भारत बीड़ो (6) वेला वाण्या रो भारत (7) रामदेवजी रो भारत (8) मीणा रो भारत (9) वासक, केसरियाजी रो भारत (10) आमज रो भारत (11) भैरू रो भारत (12) अंबाव, नारसिंघी रो भारत (13) नाथू रावत रो भारत (14) धरमराज रो भारत (15) कालका रो भारत (16) चावंड रो भारत (17) राड़ा-रूपण रो भारत (18) लालां-फूलां रो भारत (19) थापना रो भारत (20) रेबारी रो भारत (21) मासीमां रो भारत (22) मामादेव रो भारत (23) ताखा-अंबाव रो भारत (24) मासी मां भूणा-मेंदू रो भारत (25) चगोतरी रो भारत।

उस दौरान जो विचित्र अनुभव हुए वह भी एक दिलचस्प दास्तान लिए है। कुछ पुस्तकें भी इनसे सम्बन्धित देवी-देवताओं की तैयार कीं। उनमें से अधिकांश तो कलामण्डल से ही छपीं। 'मासीमां रो भारत' में मैंने देखा, एक साथ दो-दो व्यक्ति लम्बी छलांग मारते हुए चीख बैठे।

यदि कोई अजनबी व्यक्ति हो तो ऐसी चीख और ऐसे दृश्य को देख भय के मारे बेहोश ही हो जाए। कच्चे दिलवालों की तो जान तक जोखिम में पड़ सकती है मगर इस स्थिति से अभ्यस्त छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियां तथा महिलायें उस सारे दृश्य को आनंदित होती हुई देख रही थीं।

शीर्ष पहनावा पाग की विशिष्ट पहचान

-पन्नालाल मेघवाल-

संस्कृति, संस्कार एवं परम्परा के परिचायक होते हैं परिधान वहीं प्रतिष्ठा एवं मान-मर्यादा की पहचान होती हैं पाग-पगड़ियां। 'प' का अर्थ है प्रतिष्ठा और 'गड़ी' का अर्थ है जमे रहना। अर्थात् जहां प्रतिष्ठा है वहीं पगड़ी है। पाग-पगड़ियां परिधान की गौरवशाली परम्परा है। भारतीय संस्कृति में सिर को अच्छादित करना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। शूरवीर योद्धा की पाग हो अथवा युद्ध क्षेत्र में वीरता का प्रदर्शन करते कर्मवीर का कनटोप। शिरोस्त्राण का अर्थ सिर की शोभा तथा असामान्य तापमान से सुरक्षा के अलावा पाग-पगड़ी प्रतिष्ठा, स्वाभिमान, मान-सम्मान, गौरव और शौर्य की प्रतीक है। धार्मिक अनुष्ठान या शुभ कार्य सम्पन्न करने में पूजा-अर्चना के समय सिर पर शिरोस्त्राण आवश्यक रूप से धारण किया जाता है।

पाग लम्बी है तो पाग और छोटी हो तो पगड़ी कहलाती है। अधिकतम लम्बी पाग 12 गज से 24 गज तक की होती है। आम बोलचाल की भाषा में पाग के अनेक नाम हैं जैसे- पोतियो, साफा, पगड़ी, पाग, फालियो, धूमालो, फेंटो, सेलो, लपेटो, अमलो, पोमचा, मोठड़ा, पंचरंगी आदि। राजस्थान की रंग-बिरंगी संस्कृति की विशिष्ट पहचान है पाग-पगड़ियां। उदयपुर की अमराव पाग, जयपुर का शाही साफा, जोधपुर का जसवन्त शाही पेच, सामोद कलकत्ती, टोंकी, धौलपुरी, बाड़मेरी, जालौरी, जैसलमेरी, मालाणी, ढूंढ़ाड़ी आदि अनेक रूपों में प्रचलित है ये पाग पगड़ियां।

प्राचीन समय में मारवाड़ में सवा सेर सूत की पाग बांधने की प्रथा थी। ऐसी मान्यता है कि 12 कोस पर भाषा, अन्न और जल के साथ-साथ पाग के पेच, रंग, पेच की कसावट और कपड़े के स्तर बदल जाते हैं। इन्हीं के आधार पर पहचान होती है यहां की रंग-बिरंगी संस्कृति की। पाग बांधने का अर्थ सिर की शोभा बढ़ाना नहीं बल्कि पाग बांधने की कला इसकी विशिष्टता है। पाग के कलात्मक पेच और इसकी कसावट समाज में व्यक्ति की मान, प्रतिष्ठा, शौर्य, मर्यादा तथा स्वाभिमान के मानदण्ड हैं।

राजस्थान में ऋतुओं के आधार पर पागों का रंग निर्धारित है। बसंत में गुलाबी, फूल गुलाबी तथा लहरिया जिसमें रंगों की धारियां तथा हल्के छींटे लगे होते हैं। वर्षा ऋतु में मलियागिरी अर्थात जिसका रंग लाल चंदन जैसा होता है। पाग में कभी-कभी चन्दन का इत्र भी लगाया जाता है जो सावन की बयार के साथ चहूं ओर महकता है। शरद ऋतु में गुल-ए-अनार रंग की पाग का प्रचलन है।

राजस्थान में संस्कृति, वर्ण-धर्म के अलावा जाति विशेष पाग प्रथा से जुड़े हुए हैं जिनके रंग, पेच एवं कसावट की अलग-अलग किस्में हैं। विश्नोई जाति के लोग सदैव श्वेत साफा बांधते हैं, जबकि रेबारी 'लाल टूल' का साफा बांधते हैं। लंगा, मांगणियार, कालबेलिया प्राय: रंगी छापल डब्बीदार भांत वाले साफे बांधते हैं। कुम्हार, माली तथा व्यापारी अक्सर लाल, गुलाबी, केसरिया व जवाई रंगों का साफा बांधते हैं।

उदयपुर, भरतपुर, बीकानेर आदि राज परिवारों में तुर्रा-कलंगी तथा मोतियों से बनी बहुमूल्य चित्ताकर्षक पाग-पगड़ियां सामन्ती व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ती हैं। मेवाड़ क्षेत्र में कलंगी और पछेवड़ी के बिना शाही व्यक्तित्व ही अधूरा माना जाता है। रियासती काल में महाराणा के उमराव और जमींदार जो पाग बांधते थे उनमें दो पट्टियाँ उनकी हैसियत की सूचक होती थीं। सोलह उमरावों की अलग-अलग शैली में पट्टियों की संख्या में घट-बढ़ की जाती थी।

उदयपुर की अमरशाही पाग के रोचक प्रसंगानुसार यदि पिता के जीवित रहते उसका पुत्र यह पाग धारण कर ले तो उसे विद्रोही माना जाता था। छह मीटर लम्बी, कड़ी रस्सी की तरह इमली गूंथ में कसी यह पाग तलवार के वार से भी

नहीं कटती है। यह पाग सुरक्षा कवच है। पाग-पगड़ी परम्परा प्रदेशवासियों की उत्कृष्ट संस्कृति की परिचायक है वहीं पाग परिवार में समय-समय पर रंगों के माध्यम से अपने सुख-दु:ख की कहानी कहती है। शोक के समय मृतक के निकटवर्ती परिजन श्वेत पाग, तीये अथवा उठावणा पर गुलाबी, चंदेरी, सोसमी, खाकी, भूरी या काली रंग की पाग पहनते हैं। विवाहोत्सव पर केसरिया या लाल चूनर, राखी पर बहन द्वारा मोठड़ा और होली पर फागणिया बांधने का प्रचलन है।

पाग प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्रतीक है। पगड़ी को ठोकर मारना, लांघना या नीचे रखने का अर्थ है पाग बांधने वाले व्यक्ति का अपमान करना। प्रदेश में पगड़ी बदल भाई बनाने का भी चलन रहा है। पहले अतिथि के समक्ष नंगे सिर आना अपमानजनक एवं अशुभ माना जाता था। युद्धस्थल से मात्र योद्धा की पगड़ी लौटकर आना रणभूमि में योद्धा के बलिदान की सूचना होती थी। जहां पगड़ी को छीनकर हथिया लेना विजय सूचक था वहीं पगड़ी का शत्रु के हाथ लग जाना अपमानजनक था।

जिंक को मिले सात पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। हिन्दुस्तान जिंक ने 26वें भामाशाह पुरस्कारों में शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, पहल और परियोजनाओं के लिए सात पुरस्कार प्राप्त किए। हिंदुस्तान जिंक के चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर, जिंक स्मेल्टर देबारी, राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स, जवार माइन्स, रामपुरा आगुचा माइन, कायड माइन और केंद्रीय सीएसआर टीम प्रधान कार्यालय को शिक्षा क्षेत्र में सकारात्मक योगदान के लिए प्रदान किया गया। ये पुरस्कार टैगौर इंटरनेशनल स्कूल के दीप स्मृति सभागार में शिक्षामंत्री बीडी कल्ला, एडिशनल चीफ सेक्रेटरी स्कूल एजुकेशन पवनकुमार गोयल, मोटर गैराज मंत्री राजेन्द्रसिंह यादव, शिक्षा राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग, समसा के निदेशक मोहनलाल यादव, निदेशक शिक्षा गौरव अग्रवाल ने प्रदान किये। राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स के मुख्यकार्यकारी अधिकारी विनोद जांगिड एवं सीएसआर हेड भुवनेशकुमार, रामपुरा आगुचा के मुख्यकार्यकारी अधिकारी किशोरकुमार एस, सीएसआर हेड अभय गौतम, कायड़ माइन के हेड केसी मीणा एवं हेड सीएसआर विवेककुमार सिंह, चंदेरिया लेड ज़िंक स्मेल्टर के सीएसओ अनुप केआर एवं सीएसआर अधिकारी स्वेतलाना साहु, ज़िंक स्मेलटर देबारी से हेड सीएसआर अधिकारी अरूणा चीता एवं राधिका खिरिया, प्रधान कार्यालय से सीएसआर अधिकारी रूचिका चावला, जावर माइंस से ऑपरेशन हेड राममुरारी एवं महेश माथुर ने यह पुरस्कार प्राप्त किये।

Creating Signature Address Since 1998

27 Projects | 4000 Happy Faces | 24 years of Legacy | 25 Lac sq.ft. Space Delivered | 8 Ongoing Projects

ARCHI GROUP OF BUILDERS

Phase 1 RERA Reg. No.: RAJ/P/2019/1027
Phase 2 RERA Reg. No.: RAJ/P/2019/1028

Archi PEACE PARK
feel the peace.....

2BHK, 3BHK & 4 BHK
Luxury Apartments

Block A, B, C & D Delivered
Block E, F & G Ready for Possession

Amenities are operational

Site Office: 1 - New Vidhya Nagar, HM, Sec. 4, BSNL Road, Udaipur - 313002 (Raj.)
For Booking: +91 80035 97929, 75065 04498

RERA Reg. No.: RAJ/P/2019/964

ARCHI ARCADE

10+ FAMILIES HAPPILY staying

2BHK, 3BHK & 4 BHK Premium Apartments
Amenities Are Operational
Ready For Possession

- ✓ Jain Temple
- ✓ Hi-tech Gymnasium
- ✓ Indoor Games
- ✓ Party Hall

Site Office: 1 - New Bhopalpura, Behind Laxman Vatika, Near Jain Temple, Udaipur (Raj.)
For Booking: +91 94141 55525, 94604 87521

RERA Reg. No.: RAJ/P/2018/625

Archi Royal City

1/2/3 BHK
MODERN APARTMENTS
READY FOR POSSESSION

Site Office: Opp. Transport Nagar, Airport Road, Pratapnagar, Udaipur (Raj.) 313001
For Booking: +91 95880 16563, 77758 47711

RERA Reg. No.: RAJ/P/2018/788

ARCHI'S GALAXY
मेरा घर, मेरा अभिमान

मुख्यमंत्री जन आवास योजना प्रारूप 3–ए के अन्तर्गत

2 BHK FLATS
(Starting from ₹20.51 Lakh*)
LUXURY LIFESTYLE WITH MODERN AMENITIES

Site Address: NH 76, Near Zinc Smelter, Opp. Debari Power House, Udaipur - 313001 (Raj.)
For Booking: +91 89551 48546, 93526 66122

Head Office:
ARCHI GROUP OF BUILDERS
Ground Floor, Archi Arihant Apartments,100 Feet Road, Shobhagpura, Udaipur - 313001 (Raj.)

www.archigroup.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।